श्रीविद्या खड्गमाला

स्वामी सदानन्द सरस्वती

www.shrishardapeetham.com

[23/4/14 થી આફ્રિકા]

श्रीविद्याखड्गमाला

स्वामी सदानन्द सरस्वती

श्रीशारदापीठ, द्वारका

प्रकाशक

श्रीशारदापीठ विद्यासभा सञ्चालित

श्रीद्वारकाधीश संस्कृत एकेडमी एण्ड

इण्डोलॉजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट,

द्वारका, जामनगर, गुजरात

स्वामी सदानन्द सरस्वती
श्रीशारदापीठ, द्वारका

प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ

अक्षय तृतीया सं. २०७०
दिनाङ्क १३ मई २०१३

मूल्यम् : १०० रूप्यकाणि

प्रकाशक
श्रीशारदापीठ विद्यासभा सञ्चालित
श्रीद्वारकाधीश संस्कृत एकेडमी एण्ड
इण्डोलॉजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट,
द्वारका, जामनगर, गुजरात

मुद्रक
विन्डीक्राफ्ट, 210, सर्वोदय, जी.पी.ओ. के पास
अहमदाबाद-380001. दूरभाष : 079-25504503

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शङ्कराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर
एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज का संदेश

नैसर्गिक प्रेम प्राप्त करने की इच्छा जीव का स्वभाव है। इस संसार में प्रेम की समग्रता उसे माँ के वात्सल्य में मिलती है। बाल्यावस्था के वात्सल्यपूर्ण स्नेह को माँ से प्राप्त करने वाला आजीवन उसका स्मरण करता है। हमारे ऋषि मुनियों ने माँ के प्रेम के मूल में समस्त विश्व की पालयित्री महाशक्ति के प्रेम का दर्शन किया और बतलाया कि वह महामाया है। वह निर्मोह पशुपक्षियों में भी मोह उत्पन्न करके उनका स्वार्थ भुलाकर उनके पुत्रों का पालन कराती है। वह परमेश्वरी चैतन्यस्वरूपा है, समस्त गुणों की अधिष्ठात्री है। तीन शरीर रूपी तीन पुरों की साक्षिणी होने के कारण उसे त्रिपुरसुन्दरी कहा जाता है।

परमहंसी गङ्गा क्षेत्र श्रीवनम् उस जगज्जननी की उपासना का प्रमुख केन्द्र बनने जा रहा है।

साधकजन सात्विक उपचारों से उस करुणामयी की आराधना करके स्वयं सद्गुणसम्पन्न और शक्तिशाली बनकर समष्टि-व्यष्टि के समन्वित विकास में योगदान करें। सबको स्नेहमयी दृष्टि से देखते हुये सबको आह्लादित करें यह जगदम्बा से प्रार्थना है।

स्वरूपानन्द सरस्वती

किञ्चिद् वक्तव्य

भगवान् भाष्यकार श्रीमदादि शङ्कराचार्य ने अपने द्वारा रचित **त्रिपुरसुन्दरी वेदपादस्तव** में कहा है -

सन्तु विद्या जगत्यस्मिन् संसार भ्रमहेतवः ।
भजेऽहं तां यया विद्वान् विद्ययाऽमृतमश्नुते ।।

अर्थात् संसार में भ्रम उत्पन्न करने वाली अनेक विद्याएँ हैं किन्तु मैं उसका समाश्रय लेता हूँ जिसके द्वारा विद्वान् मोक्ष प्राप्त करते हैं। प्रश्न उठता है - वह विद्या कौन सी है? खाने कमाने की विद्या तो है नहीं। वह तो मोक्ष की विद्या है । विद्या की विविध परिभाषाओं को देखिए -

'सा विद्या या विमुक्तये ।' 'विद्या हि सा ब्रह्मगति प्रदा या ।' इत्यादि परिभाषाएँ विद्या की मोक्षप्रदता सिद्ध करती हैं ।

ललिता सहस्त्रनाम में पराम्बा भगवती को आत्मविद्या, महाविद्या, श्रीविद्या, और कामसेविता आदि कहा गया है । यही विद्या मन्त्राक्षरों के आधार पर पञ्चदशी, षोडशी आदि कही गई है । यह पूर्णतः गुरुगम्य है। इसकी उपासना का प्रकार अत्यन्त विस्तृत, विशिष्ट एवं गोप्य है, यही इसके दुर्लभत्व का परिचायक है ।

इस दुर्लभतम विद्या को अपनी करुण दृष्टि से सर्वसुलभ बनाने का कार्य हमारे सद्गुरुदेव पूज्यपाद ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज ने किया है और **दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा** को **आबालगोपविदिता** बना दिया है । उन्होंने देश के अनेक भागों में विशाल राजराजेश्वरी मन्दिरों का निर्माण करवाया है और साधकों को साधना हेतु प्रेरित और संबलित किया है ।

साधकों के कल्याणार्थ जगद्गुरु जी के आदेश से खड्गमाला तिथि के अनुसार नित्य-नित्यापूजन (पाठात्मक) क्रम दिया जा रहा है । श्रीविद्या साधकों को गुरु आज्ञा से ही इसका अनुष्ठान करना चाहिए।

स्वामी सदानन्द सरस्वती
श्रीशारदापीठ, द्वारका

प्रस्तावना

'श्रीविद्याखड्गमाला' विश्वविश्रुत एवं शास्त्रसम्मत १० महाविद्याओं में प्रमुख श्रीकुल की उस प्रतिनिधि देवी की आराधना से सम्बद्ध ग्रन्थ रत्न है, जिन्हें परमपावनी, भट्टारिका, जगद्वन्द्या, ऐहिकामुष्मिक फलदात्री, सर्वतोभावेन श्रेयस्करी राजराजेश्वरी भगवती त्रिपुरसुन्दरी के नाम से जाना जाता है । जगज्जननी परमपूज्या माता कामेश्वरी एवं भूतभावन जगत्पिता भगवान् कामेश्वर की संयुक्त उपासना की साकार विग्रह माताश्री भोग और मोक्ष दोनों की अधिष्ठात्री, ललितादि विशेषणों से विशिष्ट, श्रीचक्र, बिन्दुचक्र, ४३ त्रिकोणों, २८ मर्मस्थलों, २४ सन्धियों, तीन भूपुरों, षोडशदलों, अष्टकोणों, अन्तर्दशार, बहिर्दशार, अष्टदलों, तीन वृत्तों एवं ६४ योगिनियों से समन्वित यन्त्र के रूप में पूजित, भगवानाद्यशङ्कराचार्य जी महाराज द्वारा स्थापित चारों शाङ्करपीठों की आराध्या, **अग्निसोमात्मकं जगत्** के न्याय से शिवशक्ति की सामरस्यात्मक सृष्टि प्रवर्तिका, सांख्यकी प्रकृति, न्याय की परमाणु, योग की चित्तवृत्ति अथवा वेदान्त की आधारभूता सर्वस्व, वेद के श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त एवं उषस् प्रभृति सूक्तों से स्तूयमान तथा प्रकाश और विमर्श की मूलहेतु हैं । सच्चिदानन्द स्वरूपिणी देवी के श्रीयन्त्र का स्वरूपाङ्कन करते हुए कहा गया है कि -

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्ममन्वश्रनागदलसंयुतषोडशारम् ।
वृत्तत्रयश्चधरणी सदनत्रयञ्च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ।।

आपकी सपर्या से सम्बद्ध ऋषियों, महापुरुषों, मनीषियों एवं शास्त्रीय कृतियों की एक सुदीर्घपूत परम्परा है, जो अनन्तकाल से असंख्य भक्त जनसम्मर्द को आपके शिवत्व का लाभ प्रदान करती आ रही है । आप न केवल ऋक् स्वरूपा स्तुति, यजुष्‌रूपा यज्ञात्मकता (यज्ञो वै विष्णुः अथवा यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि) और

साम की नाद ब्रह्मशक्ति प्रत्युत् परा वाक्, अरण्यस्थ तपोधनों की साधना, लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की राधा, वंशीरव, त्रिदेवों को भी शिशुरूप में स्वीकारने वाली तपस्विनी अनसूया की शक्ति किंवा शिव के लिए करोड़ों जन्मपर्यन्त कौमार्य के प्रति प्रतिज्ञाबद्ध अपर्णा हैं । आपके ही ५१ रूप बहुविध शक्तिपीठों के रूप में तथा आपके ही कारण द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग शक्तिमान के रूप में पूजित हैं तथा यदि आमूलचूल, सूक्ष्म एवं सर्वतोभावेन विवेचन किया जाय, तो 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' के न्याय से जडचेतनात्मक निखिल ब्रह्माण्ड का समग्र संचालन अपने असंख्य रूपों में माता 'श्री' ही कर रही हैं । यहाँ तक कि विश्व की कोई भी साधना, सिद्धि, कार्य, ऐहिकता किंवा पारलौकिकता सभी की कारणभूता शक्ति एकमात्र जगदम्बा ही हैं । आप ही सत्त्व, रजस् व तमस् की साम्यावस्था, सृष्टि-संहार की मूल, प्रत्येक पदार्थ की लक्षणशीलता, क्रिया, इच्छादि से विशिष्ट तथा सभी के अस्तित्व का बोध कराने वाली सर्वाधार हैं । सम्भवतः वैयाकरण आपको ही सभी के भावरूप में देखते हैं और 'तस्य भावस्त्वतलौ' से आपको अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । संन्यासी परम्परा के धुरीण आचार्य भगवान् शङ्कराचार्य 'ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' और 'सर्वखल्विदं ब्रह्म' के द्वारा अन्वयव्यतिरेकत्वात् एक ही अखण्ड, अभेद, अद्वैत, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, सत्[चिदानन्दघन-परब्रह्म का प्रतिपादन करते हुए शक्तिस्वरूपात्मिका भगवती त्रिपुरसुन्दरी, त्रिगुणात्मिका माता राजराजेश्वरी श्रीविद्या की आराधना करते हुए कहते हैं कि -

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा -
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः ।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निज सायुज्यपदवीं -
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकुटनीराजितपदाम् ।।

अर्थात् हे भवानि! तुम मुझ सेवक को अपनी करुणामयी दृष्टि से

निहार दो । जब कोई मुमुक्षु तुम्हारी स्तुति करते समय - भवानि त्वं' मात्र उच्चारण कर देता है तो मात्र इसी से आप प्रसन्न होकर अपना दुर्लभ सायुज्यपद प्रदान कर देती हैं, जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र भी अपने रत्नजटित मुकुटों की आभा से आरती उतारा करते हैं । अर्थात् 'भवानि त्वं' कहते ही आप 'दासे मयि' के अर्थ का अध्याहार स्वीकारकर भक्त को हृदय से स्वीकारकर अपना मोक्ष पद प्रदान कर देती हैं क्योंकि लोक में प्रायः ऐसा देखा जाता है कि प्रत्यक्षतः जब समग्र संसार प्रगाढ़ निद्रा में सोता रहता है किंवा सतत अज्ञानान्धकार के मोहनिशा से ग्रस्त होता है तब भी आप अपनी चेतनाशक्ति से सतत जागृत रहती हैं । इसीलिए मनीषी कहते हैं कि 'अस्माकं क्षेमलाभाय जागर्ति जगदम्बिका' । विपश्चिज्जन का ऐसा मानना है कि यदि चेतनारूपी शक्ति सो गयी, तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की अस्तिता सदा के लिए समाप्त हो जाएगी । आप ही सूर्य की उषस्, चन्द्र की चन्द्रिका, महासागरों की नाद, पर्वतों की विभुता और विष्णु की लक्ष्मी, मनु की शतरूपा और शिव की प्रलयशक्ति हैं ।

विद्वज्जन का ऐसा मत है 'शत्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्तते' शास्त्रों से सुसज्जित शक्ति के द्वारा सुरक्षित व शान्त राष्ट्र में ही अध्यात्म, कला, काव्य, विज्ञान, समाजशास्त्र और प्रबन्धन, प्रशासन की चर्चा होती है; अन्यथा शत्रुजन द्वारा आक्रमण होने पर जहाँ स्वयं की रक्षा संदिग्ध होगी वहाँ अन्य प्रकार की प्रगति भला कैसे सम्भव है? अतः यदि सामान्य और सीमिति प्रशासक के लिए भी अस्त्र-शस्त्र अवश्य होते हैं और होना भी चाहिए । तो भला भगवती जगज्जननी के पास अस्त्र-शस्त्र क्यों न होंगे? इसलिए आपकी सामर्थ्य की स्तुति में भगवान् शङ्कराचार्य कहते हैं कि -

किरीटं वैरिञ्चपरिहरपुरः कैटभ भिदः ।
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारि मुकुटम् ।

प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसन्नमुपयातस्य भवनं ।

भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ।।

इस श्लोक से व्यंजित होता है कि विष्णु भी आप के शक्तिगत प्रभाव के परिणामस्वरूप मधुकैटभारि, शिव त्रिपुरारि और इन्द्र असुरारि कहे जाते हैं । आपका निवास यद्यपि सर्वोच्च स्थान आज्ञाचक्र से ऊपर पूर्णज्योतिस्थान सहस्रसार है जो मूलाधार, और विशुद्धिचक्र आदि सभी से ऊपर है फिर भी अपने अन्य रूपों में विश्व की रक्षा के लिए धनुष, बाण, खड्ग, तोमर आदि धारण करना पड़ता है । अन्यथा कामदेव, निशुम्भ, शुम्भ और अन्य राक्षसों का वध भला कैसे हो सकता था? इसलिए आप जहाँ एक ओर सर्व विद्याओं, सिद्धियों, सृष्टि, पालन और संहार की मूल हेतु हैं, वहीं अन्याय, अनाचार, अज्ञान एवं असद्कर्मों के अधिष्ठाताओं की प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से विनाश भी करती रहती है । आप लौकिक दृष्टि से अपने खड्गादि के द्वारा असद् कर्मों और असद्कर्मियों को एक ओर विनष्ट करती हैं तो दूसरी ओर तमस् को नष्टकर प्रकाश, प्रमाद से जागरण, आलस्य से चेतना, अज्ञान से ज्ञान, लौकिक विषयों से अध्यात्म, अश्रद्धा से भक्ति, प्रलय से सर्जन, चांचल्य से संयम तथा लोभ से त्याग की ओर प्रवृत्तकर निखिल ब्रह्माण्ड की रक्षा करती हैं । इसलिए व्यष्टिगत रूप से आप का खड्ग एक दिखायी देता है किन्तु अंसख्य कार्यों, रूपों एवं आवश्यकताओं के कारण आपकी खड्गमाला का असंख्य अस्तित्व स्वयं सिद्ध है । श्रीयन्त्र के केन्द्रबिन्दु का साक्षात्कार कर लेने के बाद ज्ञानियों के अनुसार जानने को अन्य कुछ अवशिष्ट नहीं रह जाता है । किन्तु वहाँ तक पहुँचने के पूर्व उसकी अधिकारित्वप्राप्ति बहुत सरल नहीं है क्योंकि पञ्चदशाक्षरी, षोडशाक्षरी आदि नामों से ज्ञातव्य हादि, कादि विद्याओं का ज्ञान अति कठिन है । फिर एतदर्थ नवावरणादि सपर्या का विधान अत्यन्त सुदीर्घ, साधनासाध्य और समयसाध्य है।

जो सभी के लिए सम्भव नहीं है । अतः जिस प्रकार भारतीय शास्त्रों में व्यास और समास शैलियों का विधान है, अर्थात् वार्तिक व भाष्य के साथ-साथ सूत्र पद्धति का विधान है । उसी प्रकार नवावरण पूजन आदि पद्धतियों के साथ-साथ श्रीविद्या की उपासना में खड्गमालासपर्या का भी विधान है। जिससे सम्पूर्ण पूजन का फल प्राप्त हो जाता है । इसलिए खड्ग समूह रूप कवच से कवचीकृत श्रीविद्या की उपासना में खड्गोपासना किंवा कवचोपासना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस तथ्य को समर्थन प्रदान करते हुए तन्त्रराज में कहा गया है कि -

प्रजप्य नित्याकवचं सकृत् सर्वं तरत्यसौ ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वो निःसपत्नो जितेन्द्रियः ।।

आपकी कवचोपासना के परिणामस्वरूप उपासक मात्र युद्धों में ही सफल नहीं होता प्रत्युत् देवों और असुरों को भी पराजित कर सकता है । आपका कवच और खड्ग सभी दिशाओं से भक्त की रक्षा करते हैं । यहाँ तक कि भूतप्रेतों के विनाशार्थ भी आपकी खड्गमाला सतत जागृत है। आपके विषय में कहा गया है कि -

भूतप्रेतपिशाचापस्मार कृत्यादिकान् गदान् ।
द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम ।।
गजास्यद्वीपि पञ्चास्य ताक्ष्यारूढाखिलायुधा ।
असंख्याः शक्तयो देव्याः पान्तुमां सर्वतः सदा ।।

इसलिए आपके ध्यान-विधान में आपके सौन्दर्यपूर्ण व वैभवशाली स्वरूप के साथ-साथ पाशाङ्कुश, शर और पुण्ड्रचाप आदि अस्त्र-शस्त्रों से युक्त स्वरूप को स्वीकारा गया है । विद्वानों के अनुसार आपका ध्यान करने वाले भक्त सम्राट् बनकर समग्र पृथ्वी के भोक्ता बन सकते हैं । यथा -

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादशमहाद्वीप सम्राट्भोक्ता भविष्यति ।।

न केवल इतना ही अपितु शुद्धशिवसंबुद्ध्यन्त माला एवं शुद्धनियमोन्तमाला के ध्यानात्मक आराधना; जो क्रमशः शुक्लपक्ष की षष्ठी,सप्तमी तथा कृष्णपक्ष की नवमी, दसमी तिथि को सम्पन्न की जाती है, में भगवती के द्वारा असम्भव को सम्भव किये जाने की सामर्थ्य को रेखाङ्कित किया गया है । उदाहरण के लिए आपके संस्पर्श से लौह भी स्वर्ण बन जाता है -

तथा सिद्ध्यति ते भक्तो यच्छरीरस्य पार्वति ।
तप्तकाञ्चनगौरस्य कदापि क्वापि न क्षयः ।।
त्वद्‌भक्तहस्तस्पर्शेन लौहोप्यष्टविधः शिवे ।
काञ्चनीभावमाप्नोति यथा स्याच्छिवतुल्यता ।।

इसी प्रकार शुद्धशिवजयान्तमाला और शुद्धशक्तिशिवमिथुन-नमोऽन्तमाला के ध्यान प्रसंग में कहा गया है कि -

लौहप्राकारसंगुप्ता निगडैर्यंत्रिता अपि ।
त्वद्‌भक्तैर्कृष्यमाणाश्च समयान्त्येव योषितः ।।
देवित्वद्‌भक्तमालोक्य शरीरेन्द्रियचेतसाम्‌ ।
स्तम्भनाद्वैरिणः स्तब्धाः स्वस्वकार्यपराङ्मुखाः ।।

वस्तुतः खड्‌गमाला की उपासना भी, जिसकी अलग-अलग अधिष्ठात्री नित्या देवियाँ हैं, श्रीशक्ति की ही संक्षिप्त उपासना है, जिनके श्रीयन्त्र में चार शिव और पाँच शक्ति त्रिकोण होते हैं । कुल मिलाकर तैतालिस त्रिकोणों का विधान है क्योंकि प्रकृति, महत्, अहङ्कार, पञ्चज्ञानेन्द्रियाँ, पञ्चकर्मेन्द्रियाँ, तन्मात्राएँ, महाभूत, सप्तधातु एवं माया के सात शुद्धाशुद्ध तत्त्व आदि मिलाकर तैतालिस तत्त्व होते हैं। श्रीयन्त्र की लेखन पद्धति दो प्रकार की है - १. समयाचार में सृष्टिक्रम । २. कौलाचार में संहारक्रम ।

श्रीविद्या का उपासक नवावरण के पूजन विधान में भी खड्‌गमाला की पूजा कर सकता है किन्तु समयाभावात्‌ तथा हवन, तर्पण आदि सामग्री के अभाव में यदि मात्र खड्‌गमाला की ही पूजा करता है तो

भी उसे पूर्ण पूजन का फल प्राप्त होता है। अतः खड्गमाला के द्वारा श्रीविद्या की आराधना सरल एवं संक्षिप्तरूप से सम्पन्न हो सकती है। इस पूजन पद्धति में खड्गमाला के कुल पाँच अंग हैं, यथा -

१. सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला, २. नमोऽन्तखड्गमाला, ३. स्वाहान्तखड्गमाला, ४. तर्पणान्तखड्गमाला, ५. जयान्तखड्गमाला। इन पाँचों के भी तीन-तीन अंग होते हैं -

१. शुद्धशक्ति, २. शुद्धशिव, ३. शुद्धशक्तिशिवमिथुन। सम्बुद्ध्यन्तमाला का प्रत्येक मन्त्र सम्बोधन में होता है। नमोऽन्तमाला के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में नमः, स्वाहान्तमाला में स्वाहा, तर्पणान्तमाला में तर्पयामि और जयान्तमाला में जय का प्रयोग होता है। प्रतिदिन इस क्रम से एक माला का पाठ करने पर पन्द्रह दिनों के एक पक्ष का पारायण पूर्ण हो जाता है। इनमें क्रमशः प्रतिदिन शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक तथा कृष्णपक्ष में विपरीत क्रम से पाठ करने का विधान है। पाठविधान के सन्दर्भ में शास्त्रसम्मत क्रम निम्नाङ्कित है -

शुक्लपक्ष में -

१. शुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमाला .... कामेश्वरीनित्या
२. शुद्धशक्तिनमोऽन्तमाला .... भगमालिनी नित्या
३. शुद्धशक्तिस्वाहान्तमाला .... नित्यक्लिन्ना नित्या
४. शुद्धशक्तितर्पणान्तमाला .... भेरुण्डा नित्या
५. शुद्धशक्तिजयान्तमाला .... वह्निवासिनी नित्या
६. शुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमाला .... महावज्रेश्वरी नित्या
७. शुद्धशिवनमोऽन्तमाला .... शिवदूती नित्या
८. शुद्धशिवस्वाहान्तमाला .... त्वरिता नित्या
९. शुद्धशिवतर्पणान्तमाला .... कुलसुन्दरी नित्या
१०. शुद्धशिवजयान्तमाला .... नित्यानित्या
११. शुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमाला .... नीलपताका नित्या
१२. शुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमाला .... विजया नित्या

निष्ठा एवं भक्ति के साथ किया है । भगवान् द्वारकाधीश एवं द्विपीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य जी महाराज के आशीर्वाद से स्वामी जी को असीम शक्ति प्राप्त हो, जिससे वे एवंविध साधना के कार्य सतत करते रहे, यही उनसे प्रार्थना है । आपके असीम स्नेह के परिणामस्वरूप मुझे इस ग्रन्थ की पृष्ठभूमि तैयार करने का जो सुअवसर सुलभ हुआ उसके लिए मेरा आपके चरणकमलों में साष्टाङ्ग प्रणिपात है ।

जगद्गुरुपादपद्मचञ्चरीक:

महामहोपाध्याय **प्रो. जयप्रकाशनारायण द्विवेदी**

निदेशक,

श्रीद्वारकाधीश संस्कृत एकेडेमी एण्ड इण्डोलॉजिकल रिसर्च इन्स्टीटयूट, द्वारका

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्टाङ्क
१	तन्त्रराजोक्त नित्याकवचम्	१
२	शुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमाला	३
३	शुद्धशक्तिनमोऽन्तमाला	६
४	शुद्धशक्तिस्वाहान्तमाला	१४
५	शुद्धशक्तितर्पणान्तमाला	१९
६	शुद्धशक्तिजयान्तमाला	२४
७	शुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमाला	२९
८	शुद्धशिवनमोऽन्तमाला	३२
९	शुद्धशिवस्वाहान्तमाला	४०
१०	शुद्धशिवतर्पणान्तमाला	४५
११	शुद्धशिवजयान्तमाला	५०
१२	शुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमाला	५५
१३	शुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमाला	५९
१४	शुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमाला	७४
१५	शुद्धशक्तिशिवमिथुनतर्पणान्तमाला	८२
१६	शुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमाला	९०
१७	सौभाग्याष्टोत्तरशतनामावलि	९८

अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर

एवं द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी

श्री कामेश्वरी नित्या

श्री भगमालिनी नित्या

श्री नित्यक्लिन्ना नित्या

श्री भेरुण्डा नित्या

श्री वह्निवासिनी नित्या

श्री महावज्रेश्वरी नित्या

श्री शिवदूती नित्या

श्री त्वरिता नित्या

श्री कुलसुन्दरी नित्या

श्री नित्या नित्या

श्री नीलपताका नित्या

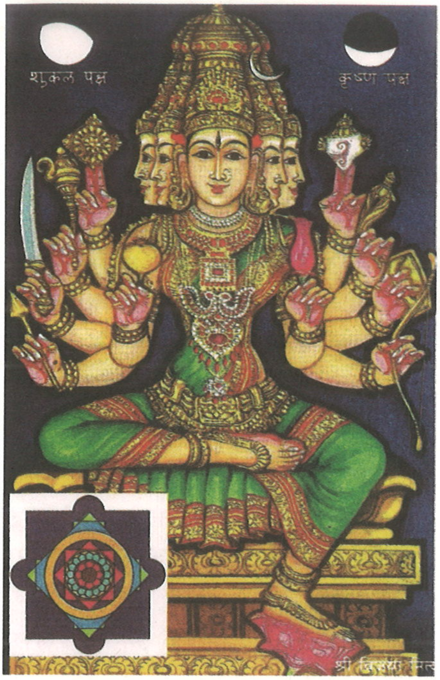

श्री विजया नित्या

श्री सर्वमङ्गला नित्या

श्री ज्वालामालिनी नित्या

श्री चित्रा नित्या

तन्त्रराजोक्तं नित्या कवचम्

समस्तापदविमुक्त्यर्थं सर्वसम्पदवाप्तये ।
भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये ॥1॥
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च ।
चोरसिंहद्वीपिगजगवयादिभयानके ॥2॥
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा ।
सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसङ्कटे ॥3॥
प्रजप्य नित्याकवचं सकृत्सर्वं तरत्यसौ ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वौ निःसपत्नो जितेन्द्रियः ॥4॥
श्रृणु तत्कवचं देवि वक्ष्ये तव तदात्मकम् ।
येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी सदा ॥5॥
सर्वतस्सर्वदाऽऽत्मानं ललिता पातु सर्वदा ।
कामेशी पुरतः पातु भगमालात्वनन्तरम् ॥6॥
दिशं पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा ।
नित्यक्लिन्ना तु भेरुण्डा दिशं पातु सदा मम ॥7॥
तथैव पश्चिमं भागं रक्षेत्सा वह्निवासिनी ।
महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ॥8॥
वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता ततः ।
पालयेत्तु दिशं वात्यां रक्षेन्मां कुलसुन्दरी ॥9॥
नित्या मामूर्ध्वतः पातु साऽधो मे पातु सर्वदा ।
नित्या नीलपताकाख्या विजया सर्वतश्च माम् ॥10॥
करोतु मे मङ्गलानि सर्वदा सर्वमङ्गला ।
देहेन्द्रियमनः प्राणान् ज्वालामालिनि विग्रहा ॥11॥
पालयेदनिशं चित्रा चित्तं मे पातु सर्वदा ।
कामात् क्रोधात् तथालोभान्मोहान्मानान्मदादपि ॥12॥

पापान्मत्सरतः शोकात्संशयात्सर्वतः सदा ।
स्तैमित्याच्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ॥13॥
असत्यात्क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा ।
रक्षन्तु मां सर्वदा ताःकुर्वन्त्विच्छां शुभेषु च ॥14॥
नित्याः षोडश मां पान्तु गजारुढाः स्वशक्तिभिः ।
तथा हयसमारुढाः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥15॥
सिंहारुढास्तथा पान्तु मां तरक्षुगता अपि ।
रथारुढाश्च मां पान्तु सर्वतः सर्वदा रणे ॥16॥
तार्क्ष्यारुढाश्च मां पान्तु तथा व्योमगतास्तु ताः ।
भूगताः सर्वदा पान्तु मां सर्वत्र च सर्वदा ॥17॥
भूतप्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् गदान् ।
द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम ॥18॥
गजाश्वद्वीपिपञ्चास्यतार्क्ष्यारुढाखिलायुधाः ।
असंख्याः शक्तयो देव्याः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥19॥
सायं प्रातर्जपेन्नित्याकवचं सर्वरत्नकम् ।
कदाचिन्नाशुभं पश्येन्न शृणोति च तत्समः ॥20॥

॥ इति नित्याकवचं सम्पूर्णम् ॥

॥श्री:॥

॥ श्रीविद्या-खड्गमाला ॥

१ शुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमाला।

क

श्री कामेश्वरी नित्या

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणिमुकुटवतीं रत्नताटङ्करम्यां,
हस्ताम्भोजैः सपांशांकुशमदनधनुः सायकैः विस्फुरन्तीम्।
आपीनोतुङ्गवक्षोरुहयुगविलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीं,
ध्यायेदम्भोरुहस्थामरुणसुवसनामीश्वरीमीश्वराणाम् ॥

शुक्लप्रतिपदि अमावस्यायाम्

अस्यश्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य,उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायिवरूणादित्यऋषये नमः। गायत्रीछन्दसे नमः। सात्त्विकककारभट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः। ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं, खड्गसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करन्यासः	**ह्रां इत्यादि हृदयादिन्यासः**
(१) ह्रां-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।	(७) ह्रां - हृदयाय नमः।
(२) ह्रीं-तर्जनीभ्यां नमः।	(८) ह्रीं - शिरसे स्वाहा।
(३) ह्रूं-मध्यमाभ्यां नमः।	(९) ह्रूं - शिखायै वषट्।
(४) ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः।	(१०) ह्रैं - कवचाय हुम्
(५) ह्रौं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः।	(११) ह्रौं- नेत्रत्रयाय वौषट्।
(६) ह्रः-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।	(१२) ह्रः - अस्त्राय फट्।

ध्यानम् -

पद्मरागप्रतीकाशां त्रिनेत्रां चन्द्रशेखराम् ।
नवरत्नलसद्भूषां भूषितां पादमस्तकम् ॥

पाशाङ्कुशौ पुष्पशरान्दधतीं पुण्ड्रचापकम् ।
पूर्णतारुण्यलावण्यतरङ्गितकलेवराम् ॥
तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति ॥

गायत्री

कामेश्वर्यै विद्महे नित्यक्लिन्नायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ।
ॐ वं अमृतात्मकं अमृतं परिकल्पयामि ।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलादि सर्वोपचारान् परिकल्पयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि (१२) हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि (३७) कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवा(शिव)दूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये (१०२) परमेश्वरपरमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रा-मय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचारमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकला-नाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि (२१७) श्रीरामानन्दमय्यणिमा-सिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२७१) ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मीः(२९६) सर्वसंक्षोभिणि

सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि (३६५) कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशापरिपूरकचक्र-स्वामिनि (४५९) गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्ग-रेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततर-योगिनि (५२२) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायक-चक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि (६२४) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्न-निवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्ण-योगिनि (७१२) सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि (७८९) वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्य-योगिनि (८३१) बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि (८८६) श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि (९१५) त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि (९६१) महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहा-श्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥१०३१।

एकत्रिंशदधिकसहस्राक्षराणि।

इति शुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमाला ॥

२ शुद्धशक्तिनमोऽन्तमाला ।

ए

श्री भगमालिनी नित्या

कुन्दकुट्मलसुश्रेणीदन्तपंङ्क्तिविराजिताम् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यां वन्देऽहं भगमालिनीम् ॥

शुक्लद्वितीयायाम्   कृष्णचतुर्दश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिनमोऽन्तमालामहामन्त्रस्य, पाय्विन्द्रियाधिष्ठायिमित्रादित्यऋषये नमः। उष्णिक्छन्दसे नमः। भोगद-एकारभट्टारकपीठस्थित-एकवीरकामेश्वराङ्कनिलयायै एकलाललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकं । पादुकासिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

तादृशं पादुकायुग्ममाप्नोति तव भक्तिमान् ।
यदाक्रमणमात्रेण क्षणात्रिभुवनक्रमः ॥

गायत्री

भगमालिन्यै विद्महे सर्ववशङ्कर्यै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१००)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिवा(शिव)दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्यायै नमः पादुकां पूजयामि । (३०८)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि । (५९५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि । (७४६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्मयै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि । (८४४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोनये नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१०२४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१२४९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१४३९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१६८५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (१८८४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्तयै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहरायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२०७४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२२०८)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२२५६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२३५३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२४१०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रियै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि । (२५४१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्तायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्त्यै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयायै नमः पादुकां पूजयामि ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि।
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (२६९६)

षण्णवत्युत्तरषट्शताधिकद्विसहस्राक्षराणि।
इति शुद्धशक्तिनमोऽन्तमाला ।

३ शुद्धशक्तिस्वाहान्तमाला ।

ई

श्री नित्यक्लिन्ना नित्या

सर्वाङ्गादिशुभां सदा सुचरितां सौभाग्यसौख्यप्रदां
गीर्वाणार्चितपादपद्मयुगलां गौरीं गणेशप्रियाम् ।
शर्वाणीं शरदिन्दुबिम्बवदनां निर्वाणबीजाङ्कुरां
ध्यायेत् दक्षिणकालहस्तिनिलयां दिव्याङ्गरागोज्वलाम् ॥

शुक्लतृतीयायाम् कृष्णत्रयोदश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिस्वाहान्तमालामहामन्त्रस्य, पादेन्द्रियाधिष्ठायिधात्रादित्यऋषये नमः। अनुष्टुप्छन्दसे नमः। मोक्षद-ईकारभट्टारकपीठस्थित-ईश्वरकामेश्वराङ्कनिलयायै ईश्वरीकामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । अञ्जनसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्

सिद्धाञ्जनं समासाद्य तेनाञ्जनितलोचनः ।
निधिं पश्यति सर्वत्र भक्तस्तेन समृद्धिमान् ॥

गायत्री

नित्यक्लिन्नायै विद्महे नित्यमदद्रवायै धीमहि । तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (१४)

हृदयदेव्यै स्वाहा शिखादेव्यै स्वाहा
शिरोदेव्यै स्वाहा कवचदेव्यै स्वाहा

नेत्रदेव्यै स्वाहा
अस्त्रदेव्यै स्वाहा (५१)
कामेश्वर्यै स्वाहा
भगमालिन्यै स्वाहा
नित्यक्लिन्नायै स्वाहा
भेरुण्डायै स्वाहा
वह्निवासिन्यै स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
शिवा(शिव)दूत्यै स्वाहा
त्वरितायै स्वाहा
कुलसुन्दर्यै स्वाहा
नित्यायै स्वाहा
नीलपताकायै स्वाहा
विजयायै स्वाहा
सर्वमङ्गलायै स्वाहा
ज्वालामालिन्यै स्वाहा
चित्रायै स्वाहा
महानित्यायै स्वाहा (१५७)
परमेश्वरपरमेश्वर्यै स्वाहा
मित्रीशमय्यै स्वाहा
षष्ठीशमय्यै स्वाहा
उड्डीशमय्यै स्वाहा
चर्यानाथमय्यै स्वाहा
लोपामुद्रामय्यै स्वाहा
अगस्त्यमय्यै स्वाहा
कालतापनमय्यै स्वाहा
धर्माचारमय्यै स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमय्यै स्वाहा
दीपकलानाथमय्यै स्वाहा
विष्णुदेवमय्यै स्वाहा
प्रभाकरदेवमय्यै स्वाहा
तेजोदेवमय्यै स्वाहा
मनोजदेवमय्यै स्वाहा
कल्याणदेवमय्यै स्वाहा
रत्नदेवमय्यै स्वाहा
वासुदेवमय्यै स्वाहा (३०८)
श्रीरामानन्दमय्यै स्वाहा
अणिमासिद्धये स्वाहा
लघिमासिद्धये स्वाहा
महिमासिद्धये स्वाहा
ईशित्वसिद्धये स्वाहा
वशित्वसिद्धये स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धये स्वाहा
भुक्तिसिद्धये स्वाहा
इच्छासिद्धये स्वाहा
प्राप्तिसिद्धये स्वाहा
सर्वकामसिद्धये स्वाहा (३८२)
ब्राह्म्यै स्वाहा
माहेश्वर्यै स्वाहा
कौमार्यै स्वाहा
वैष्णव्यै स्वाहा
वाराह्यै स्वाहा

माहेन्द्र्यै स्वाहा
चामुण्डायै स्वाहा
महालक्ष्म्यै स्वाहा (४३४)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशायै स्वाहा
सर्वखेचर्यै स्वाहा
सर्वबीजायै स्वाहा
सर्वयोन्यै स्वाहा
सर्वत्रिखण्डायै स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
प्रकटयोगिन्यै स्वाहा (५३१)
कामाकर्षण्यै स्वाहा
बुद्ध्याकर्षण्यै स्वाहा
अहङ्काराकर्षण्यै स्वाहा
शब्दाकर्षण्यै स्वाहा
स्पर्शाकर्षण्यै स्वाहा
रूपाकर्षण्यै स्वाहा
रसाकर्षण्यै स्वाहा
गन्धाकर्षण्यै स्वाहा
चित्ताकर्षण्यै स्वाहा
धैर्याकर्षण्यै स्वाहा
स्मृत्याकर्षण्यै स्वाहा
नामाकर्षण्यै स्वाहा
बीजाकर्षण्यै स्वाहा
आत्माकर्षण्यै स्वाहा
अमृताकर्षण्यै स्वाहा
शरीराकर्षण्यै स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा (६४८)
गुप्तयोगिन्यै स्वाहा
अनङ्गकुसुमायै स्वाहा
अनङ्गमेखलायै स्वाहा
अनङ्गमदनायै स्वाहा
अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा
अनङ्गरेखायै स्वाहा
अनङ्गवेगिन्यै स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशायै स्वाहा
अनङ्गमालिन्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
गुप्ततरयोगिन्यै स्वाहा (७३९)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्वाह्लादिन्यै स्वाहा
सर्वसम्मोहिन्यै स्वाहा
सर्वस्तम्भिन्यै स्वाहा
सर्वजृम्भिण्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्वरञ्जिन्यै स्वाहा

सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधिन्यै स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरण्यै स्वाहा
सर्वमन्त्रमय्यै स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सम्प्रदाययोगिन्यै स्वाहा (८७३)
सर्वसिद्धिप्रदायै स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदायै स्वाहा
सर्वप्रियङ्कर्यै स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा
सर्वकामप्रदायै स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिन्यै स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमन्यै स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिण्यै स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दर्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिन्यै स्वाहा (९८८)
सर्वज्ञायै स्वाहा
सर्वशक्तये स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदायै स्वाहा
सर्वज्ञानमय्यै स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिन्यै स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपायै स्वाहा
सर्वपापहरायै स्वाहा
सर्वानन्दमय्यै स्वाहा
सर्वरक्षास्वरूपिण्यै स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदायै स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
निगर्भयोगिन्यै स्वाहा (१०१४)
वशिन्यै स्वाहा
कामेश्वर्यै स्वाहा
मोदिन्यै स्वाहा
विमलायै स्वाहा
अरुणायै स्वाहा
जयिन्यै स्वाहा
सर्वेश्वर्यै स्वाहा
कौलिन्यै स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
रहस्ययोगिन्यै स्वाहा (११५८)
बाणिन्यै स्वाहा
चापिन्यै स्वाहा
पाशिन्यै स्वाहा
अङ्कुशिन्यै स्वाहा (११७८)
महाकामेश्वर्यै स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
महाभगमालिन्यै स्वाहा
महाश्रीसुन्दर्यै स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
अतिरहस्ययोगिन्यै स्वाहा (१२३३)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै स्वाहा

सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै स्वाहा	महामहेश्वर्यै स्वाहा
परापररहस्ययोगिन्यै स्वाहा (१२६९)	महामहाराज्ञ्यै स्वाहा
त्रिपुरायै स्वाहा	महामहाशक्तये स्वाहा
त्रिपुरेश्यै स्वाहा	महामहागुप्तायै स्वाहा
त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा	महामहाज्ञप्त्यै स्वाहा
त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा	महामहानन्दायै स्वाहा
त्रिपुराश्रियै स्वाहा	महामहास्पन्दायै स्वाहा
त्रिपुरमालिन्यै स्वाहा	महामहाशयायै स्वाहा
त्रिपुरासिद्धये स्वाहा	महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै स्वाहा
त्रिपुराम्बायै स्वाहा	नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (१३३७)	श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१४२९)

एकोनत्रिंशदधिकचतुःशतोत्तरसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिस्वाहान्तमाला ।

४ शुद्धशक्तितर्पणान्तमाला ।

ल

श्री भेरुण्डा नित्या

नित्यानन्दां निर्मलां निष्कलङ्कां नित्यां श्रीचक्रस्थितां सार्वभौमाम् ।
वेदादितां विश्ववन्द्याभिरामां देवीं भेरुण्डां भजे दिव्यरूपाम् ॥

शुक्लचतुर्थ्याम् कृष्णद्वादश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तितर्पणान्तमालामहामन्त्रस्य, पाणीन्द्रियाधिष्ठाय्यर्यमादित्यऋषये नमः। बृहतीच्छन्दसे नमः । सात्त्विकलकारभट्टारकपीठस्थितललितकामेश्वराङ्कनिलयायै ललिताललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः । ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकं । बिलसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

बिलद्वारमपावृत्य पातालतलयोगिनः ।
वीक्ष्य तेभ्यो लब्धसिद्धिस्तव भक्तस्सुखी भवेत् ॥

गायत्री

भेरुण्डायै विद्महे विषहरायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्री ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि (१६)

हृदयदेवीं तर्पयामि
शिरोदेवीं तर्पयामि
शिखादेवीं तर्पयामि
कवचदेवीं तर्पयामि
नेत्रदेवीं तर्पयामि
अस्त्रदेवीं तर्पयामि (६५)
कामेश्वरीं तर्पयामि
भगमालिनीं तर्पयामि

नित्यक्लिन्नां तर्पयामि	प्रभाकरदेवमयीं तर्पयामि
भेरुण्डां तर्पयामि	तेजोदेवमयीं तर्पयामि
वह्निवासिनीं तर्पयामि	मनोजदेवमयीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि	कल्याणदेवमयीं तर्पयामि
शिवा(शिव)दूतीं तर्पयामि	रत्नदेवमयीं तर्पयामि
त्वरितां तर्पयामि	वासुदेवमयीं तर्पयामि (३८१)
कुलसुन्दरीं तर्पयामि	श्रीरामानन्दमयीं तर्पयामि
नित्यां तर्पयामि	अणिमासिद्धिं तर्पयामि
नीलपताकां तर्पयामि	लघिमासिद्धिं तर्पयामि
विजयां तर्पयामि	महिमासिद्धिं तर्पयामि
सर्वमङ्गलां तर्पयामि	ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
ज्वालामालिनीं तर्पयामि	वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
चित्रां तर्पयामि	प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
महानित्यां तर्पयामि (१९४)	भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
परमेश्वरपरमेश्वरीं तर्पयामि	इच्छासिद्धिं तर्पयामि
मित्रीशमयीं तर्पयामि	प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
षष्ठीशमयीं तर्पयामि	सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि (४७७)
उड्डीशमयीं तर्पयामि	ब्राह्मीं तर्पयामि
चर्यानाथमयीं तर्पयामि	माहेश्वरीं तर्पयामि
लोपामुद्रामयीं तर्पयामि	कौमारीं तर्पयामि
अगस्त्यमयीं तर्पयामि	वैष्णवीं तर्पयामि
कालतापनमयीं तर्पयामि	वाराहीं तर्पयामि
धर्माचारमयीं तर्पयामि	माहेन्द्रीं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयीं तर्पयामि	चामुण्डां तर्पयामि
दीपकलानाथमयीं तर्पयामि	महालक्ष्मीं तर्पयामि (५३४)
विष्णुदेवमयीं तर्पयामि	सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि

सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशां तर्पयामि
सर्वखेचरीं तर्पयामि
सर्वबीजां तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डां तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
प्रकटयोगिनीं तर्पयामि (६५१)
कामाकर्षणीं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणीं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणीं तर्पयामि
शब्दाकर्षणीं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणीं तर्पयामि
रूपाकर्षणीं तर्पयामि
रसाकर्षणीं तर्पयामि
गन्धाकर्षणीं तर्पयामि
चित्ताकर्षणीं तर्पयामि
धैर्याकर्षणीं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणीं तर्पयामि
नामाकर्षणीं तर्पयामि
बीजाकर्षणीं तर्पयामि
आत्माकर्षणीं तर्पयामि
अमृताकर्षणीं तर्पयामि

शरीराकर्षणीं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि (८१३)
गुप्तयोगिनीं तर्पयामि
अनङ्गकुसुमां तर्पयामि
अनङ्गमेखलां तर्पयामि
अनङ्गमदनां तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरां तर्पयामि
अनङ्गरेखां तर्पयामि
अनङ्गवेगिनीं तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशां तर्पयामि
अनङ्गमालिनीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनीं तर्पयामि (९२०)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि
सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षणीं तर्पयामि
सर्वाह्लादिनीं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनीं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनीं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्वरञ्जनीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनीं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणीं तर्पयामि

सर्वमन्त्रमयीं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनीं तर्पयामि (१०८६)
सर्वसिद्धिप्रदां तर्पयामि
सर्वसंपत्प्रदां तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करीं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणीं तर्पयामि
सर्वकामप्रदां तर्पयामि
सर्वदु:खविमोचिनीं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनीं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणीं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनीं तर्पयामि(१२२२)
सर्वज्ञां तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदां तर्पयामि
सर्वज्ञानमयीं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनीं तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपां तर्पयामि
सर्वपापहरां तर्पयामि
सर्वानन्दमयीं तर्पयमि
सर्वरक्षास्वरूपिणीं तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदां तर्पयामि

सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
निगर्भयोगिनीं तर्पयामि (१३४७)
वशिनीं तर्पयामि
कामेश्वरीं तर्पयामि
मोदिनीं तर्पयामि
विमलां तर्पयामि
अरुणां तर्पयामि
जयिनीं तर्पयामि
सर्वेश्वरीं तर्पयामि
कौलिनीं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
रहस्ययोगिनीं तर्पयामि (१४२९)
बाणिनीं तर्पयामि
चापिनीं तर्पयामि
पाशिनीं तर्पयामि
अङ्कुशिनीं तर्पयामि (१४५७)
महाकामेश्वरीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
महाभगमालिनीं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरीं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनीं तर्पयामि (१५२४)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकां तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनीं तर्पयामि (१५६५)
त्रिपुरां तर्पयामि

त्रिपुरेशीं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनीं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनीं तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धां तर्पयामि
त्रिपुराम्बां तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि (१६४८)
महामहेश्वरीं तर्पयामि
महामहाराज्ञीं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहागुप्तां तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहानन्दां तर्पयामि
महामहास्पन्दां तर्पयामि
महामहाशयां तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञीं तर्पयामि (१७४५)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१७५४)

चतुःपञ्चाशदधिकसप्तशतोत्तरसहस्राक्षराणि
इति शुद्धशक्तितर्पणान्तमाला ।

५ शुद्धशक्तिजयान्तमाला ।

ह्रीं

श्री वह्निवासिनी नित्या

कुमारविघ्नराजपूजिताङ्घ्रिदिव्यपङ्कजां
हिमांशुसन्निभाननां समस्तसौख्यदायिनीम् ।
रमेशपद्मगर्भचन्द्रशेखरादिवन्दितां
नमामि चारुहासिनीं भजामि वह्निवासिनीम् ॥

शुक्लपञ्चम्याम् कृष्णैकादश्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिजयान्तमालामहामन्त्रस्य, वागिन्द्रयाधिष्ठाय्यंशुमदादित्यऋषये नमः । पङ्क्तिच्छन्दसे नमः । सात्विकह्लींकारभट्टारकपीठस्थितहृदयकामेश्वराङ्कनिलयायै हृल्लेखाललिता महाभट्टारिकायै देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । वाक्सिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

वाक्सिद्धिर्द्विविधा प्रोक्ता शापानुग्रहकारिणी ।
महाकवित्वरूपा च भक्तस्तेन द्वयास्पदः ॥

गायत्री

वह्निवासिन्यै विद्महे सिद्धिप्रदायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि जय जय (१६)

हृदयदेवि जय जय शिखादेवि जय जय
शिरोदेवि जय जय कवचदेवि जय जय

नेत्रदेवि जय जय
अस्त्रदेवि जय जय (६५)
कामेश्वरि जय जय
भगमालिनि जय जय
नित्यक्लिन्ने जय जय
भेरुण्डे जय जय
वह्निवासिनि जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
शिवा(शिव)दूति जय जय
त्वरिते जय जय
कुलसुन्दरि जय जय
नित्ये जय जय
नीलपताके जय जय
विजये जय जय
सर्वमङ्गले जय जय
ज्वालामालिनि जय जय
चित्रे जय जय
महानित्ये जय जय (१९४)
परमेश्वरपरमेश्वरि जय जय
मित्रीशमयि जय जय
षष्ठीशमयि जय जय
उड्डीशमयि जय जय
चर्यानाथमयि जय जय
लोपामुद्रामयि जय जय
अगस्त्यमयि जय जय
कालतापनमयि जय जय
धर्माचारमयि जय जय
मुक्तकेशीश्वरमयि जय जय
दीपकलानाथमयि जय जय
विष्णुदेवमयि जय जय
प्रभाकरदेवमयि जय जय
तेजोदेवमयि जय जय
मनोजदेवमयि जय जय
कल्याणदेवमयि जय जय
रत्नदेवमयि जय जय
वासुदेवमयि जय जय (३८१)
श्रीरामानन्दमयि जय जय
अणिमासिद्धे जय जय
लघिमासिद्धे जय जय
महिमासिद्धे जय जय
ईशित्वसिद्धे जय जय
वशित्वसिद्धे जय जय
प्राकाम्यसिद्धे जय जय
भुक्तिसिद्धे जय जय
इच्छासिद्धे जय जय
प्राप्तिसिद्धे जय जय
सर्वकामसिद्धे जय जय (४७७)
ब्राह्मि जय जय
माहेश्वरि जय जय
कौमारि जय जय
वैष्णवि जय जय
वाराहि जय जय
माहेन्द्रि जय जय
चामुण्डे जय जय

महालक्ष्मी जय जय (५३४)
सर्वसंक्षोभिणी जय जय
सर्वविद्राविणी जय जय
सर्वाकर्षिणी जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वमहाङ्कुशे जय जय
सर्वखेचरि जय जय
सर्वबीजे जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वत्रिखण्डे जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि जय जय
प्रकटयोगिनि जय जय (६५१)
कामाकार्षणि जय जय
बुद्ध्याकर्षणि जय जय
अहङ्काराकर्षणि जय जय
शब्दाकर्षणि जय जय
स्पर्शाकर्षणि जय जय
रूपाकर्षणि जय जय
रसाकर्षणि जय जय
गन्धाकर्षणि जय जय
चित्ताकर्षणि जय जय
धैर्याकर्षणि जय जय
स्मृत्याकर्षणि जय जय
नामाकर्षणि जय जय
बीजाकर्षणि जय जय
आत्माकर्षणि जय जय
अमृताकर्षणि जय जय
शरीराकर्षणि जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि जय जय (८१३)
गुप्तयोगिनि जय जय
अनङ्गकुसुमे जय जय
अनङ्गमेखले जय जय
अनङ्गमदने जय जय
अनङ्गमदनातुरे जय जय
अनङ्गरेखे जय जय
अनङ्गवेगिनि जय जय
अनङ्गाङ्कुशे जय जय
अनङ्गमालिनि जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि जय जय
गुप्ततरयोगिनि जय जय (९२०)
सर्वसंक्षोभिणि जय जय
सर्वविद्राविणि जय जय
सर्वाकर्षिणि जय जय
सर्वाह्लादिनि जय जय
सर्वसम्मोहिनि जय जय
सर्वस्तम्भिनि जय जय
सर्वजृम्भिणि जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्वरञ्जिनि जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय

सर्वार्थसाधिनि जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरणि जय जय
सर्वमन्त्रमयि जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि जय जय
सम्प्रदाययोगिनि जय जय (१०८६)
सर्वसिद्धिप्रदे जय जय
सर्वसम्पत्प्रदे जय जय
सर्वप्रियङ्करि जय जय
सर्वमङ्गलकारिणि जय जय
सर्वकामप्रदे जय जय
सर्वदुःखविमोचिनि जय जय
सर्वमृत्युप्रशमनि जय जय
सर्वविघ्ननिवारिणि जय जय
सर्वाङ्गसुन्दरि जय जय
सर्वसौभाग्यदायिनि जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिनि जय जय (१२२२)
सर्वज्ञे जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वैश्वर्यप्रदे जय जय
सर्वज्ञानमयि जय जय
सर्वव्याधिविनाशिनि जय जय
सर्वाधारस्वरूपे जय जय
सर्वपापहरे जय जय
सर्वानन्दमयि जय जय

सर्वरक्षास्वरूपिणि जय जय
सर्वेप्सितप्रदे जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि जय जय
निगर्भयोगिनि जय जय (१३४७)
वशिनि जय जय
कामेश्वरि जय जय
मोदिनि जय जय
विमले जय जय
अरुणे जय जय
जयिनि जय जय
सर्वेश्वरि जय जय
कौलिनि जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि जय जय
रहस्ययोगिनि जय जय (१४२९)
बाणिनि जय जय
चापिनि जय जय
पाशिनि जय जय
अङ्कुशिनि जय जय (१४५७)
महाकामेश्वरि जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
महाभगमालिनि जय जय
महाश्रीसुन्दरि जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि जय जय
अतिरहस्ययोगिनि जय जय (१५२४)
श्रीश्रीमहाभट्टारिके जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि जय जय

परापररहस्ययोगिनि जय जय (१५६५)	महामहाराज्ञि जय जय
त्रिपुरे जय जय	महामहाशक्ते जय जय
त्रिपुरेशि जय जय	महामहागुप्ते जय जय
त्रिपुरसुन्दरि जय जय	महामहाज्ञप्ते जय जय
त्रिपुरवासिनि जय जय	महामहानन्दे जय जय
त्रिपुराश्री जय जय	महामहास्पन्दे जय जय
त्रिपुरमालिनि जय जय	महामहाशये जय जय
त्रिपुरासिद्धे जय जय	महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि
त्रिपुराम्ब जय जय	जय जय (१७४४)
महात्रिपुरसुन्दरि जय जय (१६४७)	नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
महामहेश्वरि जय जय	श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१७५३)

त्रिपञ्चाशदधिकसप्तदशशताक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिजयान्तमाला ।

६ शुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

ह

श्री महावज्रेश्वरी नित्या

भूलोकादिसमस्तलोकनमितां सिद्धेश्वरालिङ्गीतां
बालादित्यसहस्त्रकोटिसदृशां भक्तेष्टदानप्रदाम् ।
मालापुस्तकपाशाङ्कुशधरां मत्तेभकुम्भस्तनीं
वन्दे दक्षिणकालहस्तिनिलयां वज्रेश्वरीमम्बिकाम् ॥

शुक्लषष्ठ्याम् कृष्णदशम्याम्

अस्य श्रीशुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, घ्राणेन्द्रियाधिष्ठायि-भगादित्यऋषये नमः। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः। भोगदहकारभट्टारकपीठस्थित-हलिनीललितामण्डिताङ्काय हलिककामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । देहशुद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

तथा सिध्यति ते भक्तो यच्छरीरस्य पार्वति ।
तप्तकाञ्चनगौरस्य कदापि क्वापि न क्षयः ॥

गायत्री

महावज्रेश्वर्यै विद्महे वज्रनित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर (१२) हृदयदेव शिरोदेव शिखादेव कवचदेव नेत्रदेव्यस्त्रदेव (३७) कामेश्वर भगमालिन् नित्यक्लिन्न भेरुण्ड वह्निवासिन् महावज्रेश्वर शिवा(शिव)दूत त्वरित कुलसुन्दर नित्य नीलपताक

विजय सर्वमङ्गल ज्वालामालिन चित्र महानित्य (९९) परमेश्वरपरमेश्वर मित्रीशमय षष्ठीशमयोड्डीशमय चर्यानाथमय लोपामुद्रामयागस्त्यमय कालतापनमय धर्माचारमय मुक्तकेशीश्वरमय दीपकलानाथमय विष्णुदेवमय प्रभाकरदेवमय तेजोदेवमय मनोजदेवमय कल्याणदेवमय रत्नदेवमय वासुदेवमय (२१४) श्रीरामानन्दमयाणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२६८) ब्राह्म माहेश्वर कौमार वैष्णव वाराह माहेन्द्र चामुण्ड महालक्ष्मीः (२९३) सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविन् सर्वाकर्षिन् सर्ववशङ्कर सर्वोन्मादिन सर्वमहाङ्कुश सर्वखेचर सर्वबीज सर्वयोने सर्वत्रिखण्ड त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् प्रकटयोगिन (३५६) कामाकर्षण बुद्ध्याकर्षणाहङ्काराकर्षण शब्दाकर्षण स्पर्शाकर्षण रूपाकर्षण रसाकर्षण गन्धाकर्षण चित्ताकर्षण धैर्याकर्षण स्मृत्याकर्षण नामाकर्षण बीजाकर्षणात्माकर्षणामृताकर्षण शरीराकर्षण सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन (४४९) गुप्तयोगिन्ननङ्गकुसुमानङ्गमेखलानङ्गमदनानङ्गमदनातुरानङ्गरेखानङ्गवेगिन्ननङ्गाङ्कुशानङ्गनङ्गमालिन् सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् गुप्ततरयोगिन (५०९) सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविन सर्वाकर्षिन् सर्वाह्लादिन् सर्वसम्मोहिन सर्वस्तम्भिन सर्वजृम्भिन् सर्ववशङ्कर सर्वरञ्जिन् सर्वोमादिन् सर्वार्थसाधिन सर्वसम्पत्तिपूरण सर्वमन्त्रमय सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् सम्प्रदाययोगिन् (५९९) सर्वसिद्धिप्रद सर्वसम्पत्प्रद सर्वप्रियङ्कर सर्वमङ्गलाकारिन् सर्वकामप्रद सर्वदुःखविमोचिन् सर्वमृत्युप्रशमन सर्वविघ्ननिवारिन् सर्वाङ्गसुन्दर सर्वसौभाग्यदायिन् सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् कुलोत्तीर्णयोगिन् (६८१) सर्वज्ञ सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रद सर्वज्ञानमय सर्वव्याधिविनाशिन् सर्वाधारस्वरूप सर्वपापहर सर्वानन्दमय सर्वरक्षास्वरूपिन् सर्वेप्सितप्रद सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् निगर्भयोगिन् (७५४) वशिन् कामेश्वर मोदिन् विमलारूण जयिन् सर्वेश्वर कौलिन् सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् रहस्ययोगिन् (७९०) बाणिन् चापिन् पाशिन्नङ्कुशिन् (५९९) महाकामेश्वर महावज्रेश्वर महाभगमालिन्

महाश्रीसुन्दर सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्नातिरहस्ययोगिन् (८४०) श्रीश्रीमहाभट्टारक सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन परापररहस्ययोगिन् (८६७) त्रिपुरत्रिपुरेश त्रिपुरसुन्दर त्रिपुरवासिन त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिन् त्रिपुरासिद्ध त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दर (९११) महामहेश्वर महामहाराज महामहाशक्ते महामहागुप्त महामहाज्ञप्त महामहानन्द महामहास्पन्द महामहाशय महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज (९७२) नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥(९८१)

एकाशीत्यधिकनवशतान्यक्षराणि ।

इति शुद्धशिवसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

७ शुद्धशिवनमोऽन्तमाला ।

स

श्री शिवदूती नित्या

सर्वाधारां सामगानप्रियाञ्च सूक्ष्मां शुद्धां सूर्यचन्द्राग्निनेत्राम्।
श्रीचक्रस्थां चिन्मयीं सिद्धविद्यां वन्दे दूतीं मातरं वेदवेद्याम्॥

शुक्लसप्तम्याम् कृष्णनवम्याम्

अस्य श्रीशुद्धशिवनमोऽन्तमालमहामन्त्रस्य, जिह्वेन्द्रियाधिष्ठायीन्द्रादित्य-ऋषये नमः । जगतीच्छन्दसे नमः । भोगदसकारभट्टारकपीठस्थित-सरस्वतीललितामण्डिताङ्काय सर्वज्ञकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । लोहसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

त्वद्भक्तहस्तस्पर्शेन लोहोऽप्यष्टविधशिवे ।
काञ्चनीभावमाप्नोति यथा स्याच्छिवतुल्यता ॥

गायत्री

शिवदूत्यै विद्महे शिवङ्कर्यै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (२२)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि (१०७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिवा(शिव)दूताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्याय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्याय नमः पादुकां पूजयामि (२३९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि (६२४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि (७७६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि (८९०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोनये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१०७३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीज़ाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि (१३३६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिने नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१५०४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१७५४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वदुःखविमोचिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिने नमःपादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (१९५६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२१४९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलाय नमः पादुकां पूजयाम
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिने नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२२८५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिने नमः पादुकां पूजयामि (२३३३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२४३३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२४९०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रिये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (२६२४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराजाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि (२७७५)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (२७८४)

चतुरशीत्यधिकसप्तशतोत्तरद्विसहस्त्राक्षराणि ।
इति शुद्धशिवनमोऽन्तमाला ।।

८ शुद्धशिवस्वाहान्तमाला ।

क

श्री त्वरिता नित्या

न वेद्मि मन्त्रं न हि चक्रपूजां न वेद्मि होमं न हि योगदीक्षाम्।
न वेद्मि मुद्रां न हि वेदशास्त्रं त्वदङ्घ्रियुग्मं मनसा स्मरामि ॥

शुक्लाष्टम्याम्   कृष्णाष्टम्याम्

अस्य श्रीशुद्ध शिवस्वाहान्तमालामहामन्त्रस्य, चक्षुरिन्द्रयाधिष्ठायि-विवस्वदादित्यऋषये नमः। अतिजगतीच्छन्दसे नमः। तामसककार-भट्टारकपीठस्थितकमलाललितामण्डिताङ्काय कालमर्दनकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । अणिमाद्यष्टैश्वर्यसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

येऽष्टाणुत्वमहत्त्वाद्याः स्वेच्छामात्रप्रकल्पिताः ।
तव भक्तशरीराणां ते स्युर्नैसर्गिका गुणाः ॥

गायत्री

त्वरितायै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (१५)

हृदयदेवाय स्वाहा
शिरोदेवाय स्वाहा
शिखादेवाय स्वाहा
कवचदेवाय स्वाहा
नेत्रदेवाय स्वाहा
अस्त्रदेवाय स्वाहा (५८)

कामेश्वराय स्वाहा
भगमालिने स्वाहा
नित्यक्लिन्नाय स्वाहा
भेरुण्डाय स्वाहा
वह्निवासिने स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
शिवा(शिव)दूताय स्वाहा
त्वरिताय स्वाहा
कुलसुन्दराय स्वाहा
नित्याय स्वाहा
नीलपताकाय स्वाहा
विजयाय स्वाहा
सर्वमङ्गलाय स्वाहा
ज्वालामालिने स्वाहा
चित्राय स्वाहा
महानित्याय स्वाहा (१६८)
परमेश्वरपरमेश्वराय स्वाहा
मित्रीशमयाय स्वाहा
षष्ठीशमयाय स्वाहा
उड्डीशमयाय स्वाहा
चर्यानाथमयाय स्वाहा
लोपामुद्रामयाय स्वाहा
अगस्त्यमयाय स्वाहा
कालतापनमयाय स्वाहा
धर्माचारमयाय स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमयाय स्वाहा
दीपकलानाथमयाय स्वाहा
विष्णुदेवमयाय स्वाहा
प्रभाकरदेवमयाय स्वाहा
तेजोदेवमयाय स्वाहा
मनोजदेवमयाय स्वाहा
कल्याणदेवमयाय स्वाहा
रत्नदेवमयाय स्वाहा
वासुदेवमयाय स्वाहा (३३७)
श्रीरामानन्दमयाय स्वाहा
अणिमासिद्धये स्वाहा
लघिमासिद्धये स्वाहा
महिमासिद्धये स्वाहा
ईशित्वसिद्धये स्वाहा
वशित्वसिद्धये स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धये स्वाहा
भुक्तिसिद्धये स्वाहा
इच्छासिद्धये स्वाहा
प्राप्तिसिद्धये स्वाहा
सर्वकामसिद्धये स्वाहा (४२२)
ब्राह्माय स्वाहा
माहेश्वराय स्वाहा
कौमाराय स्वाहा
वैष्णवाय स्वाहा
वाराहाय स्वाहा
माहेन्द्राय स्वाहा
चामुण्डाय स्वाहा

महालक्ष्म्ये स्वाहा (४७०)
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशाय स्वाहा
सर्वखेचराय स्वाहा
सर्वबीजाय स्वाहा
सर्वयोनये स्वाहा
सर्वत्रिखण्डाय स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने स्वाहा
प्रकटयोगिने स्वाहा (५६९)
कामाकर्षणाय स्वाहा
बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहा
अहङ्काराकर्षणाय स्वाहा
शब्दाकर्षणाय स्वाहा
स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा
रूपाकर्षणाय स्वाहा
रसाकर्षणाय स्वाहा
गन्धाकर्षणाय स्वाहा
चित्ताकर्षणाय स्वाहा
धैर्याकर्षणाय स्वाहा
स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा
नामाकर्षणाय स्वाहा
बीजाकर्षणाय स्वाहा
आत्माकर्षणाय स्वाहा
अमृताकर्षणाय स्वाहा
शरीराकर्षणाय स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने स्वाहा (७१३)
गुप्तयोगिने स्वाहा
अनङ्गकुसुमाय स्वाहा
अनङ्गमेखलाय स्वाहा
अनङ्गमदनाय स्वाहा
अनङ्गमदनातुराय स्वाहा
अनङ्गरेखाय स्वाहा
अनङ्गवेगिने स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशाय स्वाहा
अनङ्गमालिने स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने स्वाहा
गुप्ततरयोगिने स्वाहा (८०४)
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्वाह्लादिने स्वाहा
सर्वसम्मोहिने स्वाहा
सर्वस्तम्भिने स्वाहा
सर्वजृम्भिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वरञ्जिने स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वार्थसाधिने स्वाहा

सर्वसम्पत्तिपूरणाय स्वाहा
सर्वमन्त्रमयाय स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने स्वाहा।
सम्प्रदाययोगिने स्वाहा (९४२)
सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदाय स्वाहा
सर्वप्रियङ्कराय स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिणे स्वाहा
सर्वकामप्रदाय स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिने स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमनाय स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिणे स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिने स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिने स्वाहा (१०६०)
सर्वज्ञाय स्वाहा
सर्वशक्तये स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदाय स्वाहा
सर्वज्ञानमयाय स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिने स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपाय स्वाहा
सर्वपापहराय स्वाहा
सर्वानन्दमयाय स्वाहा
सर्वरक्षास्वरूपिणे स्वाहा

सर्वेप्सितप्रदाय स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने स्वाहा
निगर्भयोगिने स्वाहा (११६९)
वशिने स्वाहा
कामेश्वराय स्वाहा
मोदिने स्वाहा
विमलाय स्वाहा
अरुणाय स्वाहा
जयिने स्वाहा
सर्वेश्वराय स्वाहा
कौलिने स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिने स्वाहा
रहस्ययोगिने स्वाहा (१२३५)
बाणिने स्वाहा
चापिने स्वाहा
पाशिने स्वाहा
अङ्कुशिने स्वाहा (१२५५)
महाकामेश्वराय स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
महाभगमालिने स्वाहा
महाश्रीसुन्दराय स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने स्वाहा
अतिरहस्ययोगिने स्वाहा (१३१३)
श्रीश्रीमहाभट्टारकाय स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने स्वाहा
परापररहस्ययोगिने स्वाहा (१३४९)

त्रिपुराय स्वाहा
त्रिपुरेशाय स्वाहा
त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
त्रिपुरवासिने स्वाहा
त्रिपुराश्रिये स्वाहा
त्रिपुरमालिने स्वाहा
त्रिपुरासिद्धाय स्वाहा
त्रिपुराम्बाय स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (१४२०)
महामहेश्वराय स्वाहा
महामहाराजाय स्वाहा
महामहाशक्तये स्वाहा
महामहागुप्ताय स्वाहा
महामहाज्ञप्तये स्वाहा
महामहानन्दाय स्वाहा
महामहास्पन्दाय स्वाहा
महामहाशयाय स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय
स्वाहा (१५०८)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१५१७)

सप्तदशाधिकपञ्चशतोत्तरसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशिवस्वाहान्तमाला ।

९ शुद्धशिवतर्पणान्तमाला ।

ह

श्री कुलसुन्दरी नित्या

सदाशिवकुटुम्बिनीं सकलमन्त्रसञ्चारिणीं
सदा शुभकरीं शिवां सुजनक्लेशसंहारिणीम् ।
गदाधरसहोदरीं गजमुखप्रियां शाङ्करीं
भजामि कुलसुन्दरीं प्रमथनायिकां मातरम् ॥

शुक्लनवम्याम् कृष्णसप्तम्याम्

अस्य श्रीशुद्धशिवतर्पणान्तमालामहामन्त्रस्य, त्वगिन्द्रियाधिष्ठाय-पूषादित्यऋषये नमः। शक्करीच्छन्दसे नमः। मोक्षदहकारभट्टारकपीठस्थित-हरिवल्लभाललितामण्डिताङ्काय हरनाथकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । सर्ववश्यसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

शरीरमर्थं प्राणांश्च निवेद्य निजभृत्यवत् ।
तव भक्तान्निषेवन्ते वशीभूता नृपादयः ॥

गायत्री

कुलसुन्दर्यै विद्महे कामेश्वर्यै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (१६)

हृदयदेवं तर्पयामि शिखादेवं तर्पयामि
शिरोदेवं तर्पयामि कवचदेवं तर्पयामि

नेत्रदेवं तर्पयामि
अस्त्रदेवं तर्पयामि (६५)
कामेश्वरं तर्पयामि
भगमालिनं तर्पयामि
नित्यक्लिन्नं तर्पयामि
भेरुण्डं तर्पयामि
वह्निवासिनं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
शिवा(शिव)दूतं तर्पयामि
त्वरितं तर्पयामि
कुलसुन्दरं तर्पयामि
नित्यं तर्पयामि
नीलपताकं तर्पयामि
विजयं तर्पयामि
सर्वमङ्गलं तर्पयामि
ज्वालामालिनं तर्पयामि
चित्रं तर्पयामि
महानित्यं तर्पयामि (१९४)
परमेश्वरपरमेश्वरं तर्पयामि
मित्रीशमयं तर्पयामि
षष्ठीशमयं तर्पयामि
उड्डीशमयं तर्पयामि
चर्यानाथमयं तर्पयामि
लोपामुद्रामयं तर्पयामि
अगस्त्यमयं तर्पयामि
कालतापनमयं तर्पयामि
धर्माचारमयं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयं तर्पयामि
दीपकलानाथमयं तर्पयामि
विष्णुदेवमयं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयं तर्पयामि
तेजोदेवमयं तर्पयामि
मनोजदेवमयं तर्पयामि
कल्याणदेवमयं तर्पयामि
रत्नदेवमयं तर्पयामि
वासुदेवमयं तर्पयामि (३८१)
श्रीरामानन्दमयं तर्पयामि
अणिमासिद्धिं तर्पयामि
लघिमासिद्धिं तर्पयामि
महिमासिद्धिं तर्पयामि
ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
इच्छासिद्धिं तर्पयामि
प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि (४७७)
ब्राह्मं तर्पयामि
माहेश्वरं तर्पयामि
कौमारं तर्पयामि
वैष्णवं तर्पयामि
वाराहं तर्पयामि
माहेन्द्रं तर्पयामि
चामुण्डं तर्पयामि

महालक्ष्मीं तर्पयामि (५३४)
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशं तर्पयामि
सर्वखेचरं तर्पयामि
सर्वबीजं तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डं तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनं तर्पयामि
प्रकटयोगिनं तर्पयामि (६५१)
कामाकर्षणं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणं तर्पयामि
शब्दाकर्षणं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि
रूपाकर्षणं तर्पयामि
रसाकर्षणं तर्पयामि
गन्धाकर्षणं तर्पयामि
चित्ताकर्षणं तर्पयामि
धैर्याकर्षणं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि
नामाकर्षणं तर्पयामि
बीजाकर्षणं तर्पयामि
आत्माकर्षणं तर्पयामि
अमृताकर्षणं तर्पयामि
शरीराकर्षणं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनं तर्पयामि (८१३)
गुप्तयोगिनं तर्पयामि
अनङ्गकुसुमं तर्पयामि
अनङ्गमेखलं तर्पयामि
अनङ्गमदनं तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरं तर्पयामि
अनङ्गरेखं तर्पयामि
अनङ्गवेगिनं तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशं तर्पयामि
अनङ्गमालिनं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनं तर्पयामि (९२०)
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्वाह्लादिनं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वरञ्जिनं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणं तर्पयामि
सर्वमन्त्रमयं तर्पयामि

सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनं तर्पयामि (१०८६)
सर्वसिद्धिप्रदं तर्पयामि
सर्वसम्पत्प्रदं तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणं तर्पयामि
सर्वकामप्रदं तर्पयामि
सर्वदुःखविमोचिनं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनं तर्पयामि (१२२२)
सर्वज्ञं तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदं तर्पयामि
सर्वज्ञानमयं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनं तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपं तर्पयामि
सर्वपापहरं तर्पयामि
सर्वानन्दमयं तर्पयामि
सर्वरक्षास्वरूपिणं तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदं तर्पयामि
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनं तर्पयामि

निगर्भयोगिनं तर्पयामि (१३४७)
वशिनं तर्पयामि
कामेश्वरं तर्पयामि
मोदिनं तर्पयामि
विमलं तर्पयामि
अरुणं तर्पयामि
जयिनं तर्पयामि
सर्वेश्वरं तर्पयामि
कौलिनं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
रहस्ययोगिनं तर्पयामि (१४२९)
बाणिनं तर्पयामि
चापिनं तर्पयामि
पाशिनं तर्पयामि
अङ्कुशिनं तर्पयामि (१४५७)
महाकामेश्वरं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
महाभगमालिनं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनं तर्पयामि (१५२४)
श्रीश्रीमहाभट्टारकं तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनं तर्पयामि (१५६५)
त्रिपुरं तर्पयामि
त्रिपुरेशं तर्पयामि

त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनं तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धं तर्पयामि
त्रिपुराम्बं तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (१६४८)
महामहेश्वरं तर्पयामि
महामहाराजं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहागुप्तं तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहानन्दं तर्पयामि
महामहास्पन्दं तर्पयामि
महामहाशयं तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजं तर्पयामि
(१७४५)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं । (१७५४)

चतुःपञ्चादशदधिकसप्तशतोत्तरसहस्राक्षराणि
इति शुद्धशिवतर्पणान्तमाला ।

१० शुद्धशिवजयान्तमाला ।

ल

श्री नित्या नित्या

कालातीतां भानुकोटिप्रकाशां मूलाधारां सर्वसिद्धिप्रदाञ्च ।
बालां बन्दूकप्रभां पङ्कजाक्षीं देवीं नित्यां सन्ततं भावयामि ॥

शुक्लदशम्याम्　　　　　　　　　　　　　　　　　कृष्णाषष्ठ्याम्

अस्यश्रीशुद्धशिवजयान्तमाला महामन्त्रस्य, श्रोत्रेन्द्रियाधिष्ठायिसवित्रादित्यऋषये नमः। अतिशक्करीच्छन्दसे नमः। तामसलकार भट्टारकपीठस्थितलक्ष्मीललितामण्डिताङ्काय ललज्जिह्वाकामेश्वरमहाभट्टारकाय देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । सर्वाकर्षणसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

लोहप्राकारसङ्गुप्ता निगडैर्यन्त्रिता अपि ।
त्वद्भक्तैः कृष्यमाणाश्च समयान्त्येव योषितः ॥

गायत्री

नित्याभैरव्यै विद्महे नित्यानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर जय जय (१६)

हृदयदेव जय जय	नेत्रदेव जय जय
शिरोदेव जय जय	अस्त्रदेव जय जय (६५)
शिखादेव जय जय	कामेश्वर जय जय
कवचदेव जय जय	भगमालिन जय जय

नित्यक्लिन्न जय जय	प्रभाकरदेवमय जय जय
भेरुण्ड जय जय	तेजोदेवमय जय जय
वह्निवासिन् जय जय	मनोजदेवमय जय जय
महावज्रेश्वर जय जय	कल्याणदेवमय जय जय
शिवा(शिव)दूत जय जय	रत्नदेवमय जय जय
त्वरित जय जय	वासुदेवमय जय जय (३७८)
कुलसुन्दर जय जय	श्रीरामानन्दमय जय जय
नित्य जय जय	अणिमासिद्धे जय जय
नीलपताक जय जय	लघिमासिद्धे जय जय
विजय जय जय	महिमासिद्धे जय जय
सर्वमङ्गल जय जय	ईशित्वसिद्धे जय जय
ज्वालामालिन् जय जय	वशित्वसिद्धे जय जय
चित्र जय जय	प्राकाम्यसिद्धे जय जय
महानित्य जय जय (१९१)	भुक्तिसिद्धे जय जय
परमेश्वरपरमेश्वर जय जय	इच्छासिद्धे जय जय
मित्रीशमय जय जय	प्राप्तिसिद्धे जय जय
षष्ठीशमय जय जय	सर्वकामसिद्धे जय जय (४७४)
उड्डीशमय जय जय	ब्राह्म जय जय
चर्यानाथमय जय जय	माहेश्वर जय जय
लोपामुद्रामय जय जय	कौमार जय जय
अगस्त्यमय जय जय	वैष्णव जय जय
कालतापनमय जय जय	वाराह जय जय
धर्माचारमय जय जय	माहेन्द्र जय जय
मुक्तकेशीश्वरमय जय जय	चामुण्ड जय जय
दीपकलानाथमय जय जय	महालक्ष्मि जय जय (५३१)
विष्णुदेवमय जय जय	सर्वसंक्षोभिन् जय जय

सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वोन्मादिन जय जय
सर्वमहाङ्कुश जय जय
सर्वखेचर जय जय
सर्वबीज जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वत्रिखण्ड जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् जय जय
प्रकटयोगिन जय जय (६४२)
कामाकर्षण जय जय
बुद्ध्याकर्षण जय जय
अहङ्काराकर्षण जय जय
शब्दाकर्षण जय जय
स्पर्शाकर्षण जय जय
रूपाकर्षण जय जय
रसाकर्षण जय जय
गन्धाकर्षण जय जय
चित्ताकर्षण जय जय
धैर्याकर्षण जय जय
स्मृत्याकर्षण जय जय
नामाकर्षण जय जय
बीजाकर्षण जय जय
आत्माकर्षण जय जय
अमृताकर्षण जय जय
शरीराकर्षण जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन जय जय
गुप्तयोगिन जय जय (८११)
अनङ्गकुसुम जय जय
अनङ्गमेखल जय जय
अनङ्गमदन जय जय
अनङ्गमदनातुर जय जय
अनङ्गरेख जय जय
अनङ्गवेगिन जय जय (८६६)
अनङ्गाङ्कुश जय जय
अनङ्गमालिन् जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् जय जय
गुप्ततरयोगिन जय जय (९०७)
सर्वसंक्षोभिन् जय जय
सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्वाह्लादिन् जय जय
सर्वसम्मोहिन् जय जय
सर्वस्तम्भिन जय जय
सर्वजृम्भिन् जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वरञ्जिन् जय जय
सर्वोन्मादिन् जय जय
सर्वार्थसाधिन् जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरण जय जय
सर्वमन्त्रमय जय जय

सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् जय जय
सम्प्रदाययोगिन् जय जय (१०६१)
सर्वसिद्धिप्रद जय जय
सर्वसम्पत्प्रद जय जय
सर्वप्रियङ्कर जय जय
सर्वमङ्गलाकारिन् जय जय
सर्वकामप्रद जय जय
सर्वदुःखविमोचिन् जय जय
सर्वमृत्युप्रशमन जय जय
सर्वविघ्ननिवारिन् जय जय
सर्वाङ्गसुन्दर जय जय
सर्वसौभाग्यदायिन् जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिन् जय जय (११९१)
सर्वज्ञ जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वैश्वर्यप्रद जय जय
सर्वज्ञानमय जय जय
सर्वव्याधिविनाशिन् जय जय
सर्वाधारस्वरूप जय जय
सर्वपापहर जय जय
सर्वानन्दमय जय जय
सर्वरक्षास्वरूपिन् जय जय
सर्वेप्सितप्रद जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् जय जय
निगर्भयोगिन् जय जय (१३१२)
वशिन् जय जय
कामेश्वर जय जय
मोदिन् जय जय
विमल जय जय
अरुण जय जय
जयिन् जय जय
सर्वेश्वर जय जय
कौलिन् जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् जय जय
रहस्ययोगिन् जय जय (१३८८)
बाणिन् जय जय
चापिन् जय जय
पाशिन् जय जय
अङ्कुशिन् जय जय (१४१३)
महाकामेश्वर जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
महाभगमालिन् जय जय
महाश्रीसुन्दर जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन् जय जय
अतिरहस्ययोगिन् जय जय (१४७८)
श्रीश्रीमहाभट्टारक जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन् जय जय
परापररहस्ययोगिन् जय जय (१५१७)
त्रिपुर जय जय
त्रिपुरेश जय जय
त्रिपुरसुन्दर जय जय

त्रिपुरवासिन् जय जय
त्रिपुराश्री जय जय
त्रिपुरमालिन् जय जय
त्रिपुरासिद्ध जय जय
त्रिपुराम्ब जय जय
महात्रिपुरसुन्दर जय जय (१५९७)
महामहेश्वर जय जय
महामहाराज जय जय
महामहाशक्ते जय जय
महामहागुप्त जय जय
महामहाज्ञप्ते जय जय
महामहानन्द जय जय
महामहास्पन्द जय जय
महामहाशय जय जय
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज-
जय जय (१६९४)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१७०३)

त्र्यधिकसप्तदशशतान्यक्षराणि ।
इति शुद्धशिवजयान्तमाला ।

११ शुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

ह्रीं

श्री नीलपताका नित्या

ब्रह्मेन्द्ररुद्रकमलासनभानुचन्द्र-
कन्दर्पगूहप्रमुखार्चितदिव्यपादाम् ।
देवीं त्रिलोकजननीं त्रिगुणस्वरूपां
ध्यायामि नीलचिकुरां शुभपुण्यपुञ्जाम् ॥

शुक्लैकादश्याम् कृष्णपञ्चम्याम्

अस्यश्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रयस्य, अहङ्कारतत्त्व-धिष्ठायित्वष्ट्रादित्यऋषये नमः। अष्टिच्छन्दसे नमः। तामसह्लींकारभट्टारक-पीठस्थितहिरण्याललितामहाभट्टारिकाहृदयेश्वरकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं,क्लीं शक्तिः,सौः कीलकम् । सर्वसम्मोहनसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

अम्बिके तव भक्तानामवलोकनमात्रतः ।
कृत्याकृत्यविमूढाः स्युर्नरा नार्यो नृपादयः ॥

गायत्री

नीलपताकायै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरसुन्दर (१८) हृदयदेवि हृदयदेव शिरोदेवि शिरोदेव शिखादेवि शिखादेव कवचदेवि कवचदेव

नेत्रदेवि नेत्रदेवास्त्रदेव्यस्त्रदेव (६८) कामेश्वरि कामेश्वर भगमालिनि भगमालिन् नित्यक्लिन्ने नित्यक्लिन्न भेरुण्डे भेरुण्ड वह्निवासिनि वह्निवासिन् महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर शिवा(शिव)दूति शिवा(शिव)दूत त्वरिते त्वरित कुलसुन्दरि कुलसुन्दर नित्ये नित्य नीलपताके नीलपताक विजये विजय सर्वमङ्गले सर्वमङ्गल ज्वालामालिनि ज्वालामालिन् चित्रे चित्र महानित्ये महानित्य (१९५) परमेश्वरपरमेश्वरि परमेश्वरपरमेश्वर मित्रीशमयि मित्रीशमय षष्ठीशमयी षष्ठीशमयोड्डीशमयुड्डीशमय चर्यानाथमयि चर्यानाथमय लोपामुद्रामयि लोपामुद्रामयागस्त्यमय्यगस्त्यमय कालतापनमयि कालतापनमय धर्माचार-मयि धर्माचारमय मुक्तकेशीश्वरमयि मुक्तकेशीश्वरमय दीपकलानाथमयि दीपकलानाथमय विष्णुदेवमयि विष्णुदेवमय प्रभाकरदेवमयि प्रभाकरदेवमय तेजोदेवमयि तेजोदेवमय मनोजदेवमयि मनोजदेवमय कल्याणदेवमयि कल्याणदेवमय रत्नदेवमयि रत्नदेवमय वासुदेवमयि वासुदेवमय (४२५) श्रीरामानन्दमयि श्रीरामानन्दमयाणिमा-सिद्धेऽणिमासिद्ध लघिमासिद्धे लघिमासिद्ध महिमासिद्धे महिमासिद्ध ईशित्वसिद्धे ईशित्वसिद्ध वशित्वसिद्धे वशित्वसिद्ध प्राकाम्यसिद्धे प्राकाम्यसिद्ध भुक्तिसिद्धे भुक्तिसिद्ध इच्छासिद्धे इच्छासिद्ध प्राप्तिसिद्धे प्राप्तिसिद्ध सर्वकामसिद्धे सर्वकामसिद्ध (५३३) ब्राह्मि ब्राह्म माहेश्वरि माहेश्वर कौमारि कौमार वैष्णवि वैष्णव वाराहि वाराह माहेन्द्रि माहेन्द्र चामुण्डे चामुण्ड महालक्ष्मीर्महालक्ष्मी (५८३) सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविणि सर्वविद्राविन् सर्वाकर्षिणि सर्वाकर्षिन् सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन् सर्वमहाङ्कुशे सर्वमहाङ्कुश सर्वखेचरि सर्वखेचर सर्वबीजे सर्वबीज सर्वयोने सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे सर्वत्रिखण्ड त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् प्रकटयोगिनि प्रकटयोगिन् (७१५) कामाकर्षिणि कामाकर्षण बुद्ध्याकर्षिणि बुद्ध्याकर्षण अहङ्काराकर्षिणि अहङ्काराकर्षण शब्दाकर्षिणि शब्दाकर्षण स्पर्शाकर्षिणि स्पर्शाकर्षण रूपाकर्षिणि रूपाकर्षण रसाकर्षिणि रसाकर्षण गन्धाकर्षिणि गन्धाकर्षण चित्ताकर्षिणि चित्ताकर्षण धैर्याकर्षिणि धैर्याकर्षण स्मृत्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षण नामाकर्षिणि नामाकर्षण

बीजाकर्षणि बीजाकर्षणात्माकर्षण्यात्माकर्षणमृताकर्षण्यमृताकर्षण शरीराकर्षणि शरीराकर्षण सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्(९०२) गुप्तयोगिनि गुप्तयोगिन्ननङ्गकुसुमेनङ्गकुसुमानङ्ग-मेखलेऽनङ्गमेखलानङ्ग-मदनेऽनङ्गमदनानङ्गमदनातुरेऽनङ्गमदनातुरानङ्गरेखेऽनङ्गरेखानङ्गवेगिन्य-नङ्गवेगिन्ननङ्गाङ्कुशेऽनङ्गाङ्कुशानङ्गमालिन्यनङ्गमालिन् सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् गुप्ततरयोगिनि गुप्ततरयोगिन् (१०२५) सर्वसंक्षोभिणि सर्वसंक्षोभिन् सर्वविद्राविणि सर्वविद्राविन् सर्वाकर्षिणी सर्वाकर्षिन् सर्वह्लादिनि सर्वह्लादिन् सर्वसम्मोहिनि सर्वसम्मोहिन् सर्वस्तम्भिनि सर्वस्तम्भिन् सर्वजृम्भिणि सर्वजृम्भिन् सर्ववशङ्करि सर्ववशङ्कर सर्वरञ्जिनि सर्वरञ्जिन् सर्वोन्मादिनि सर्वोन्मादिन् सर्वार्थसाधिनि सर्वार्थसाधिन् सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वसम्पत्तिपूरण सर्वमन्त्रमयि सर्वमन्त्रमय सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर सर्वसौभाग्य-दायकचक्रस्वामिनि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् सम्प्रदाययोगिनि सम्प्रदाययोगिन् (१२१७) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसिद्धिप्रद सर्वसम्पत्प्रदे सर्वसम्पत्प्रद सर्वप्रियङ्करि सर्वप्रियङ्कर सर्वमङ्गलकारिणि सर्वमङ्गलकारिन् सर्वकामप्रदे सर्वकामप्रद सर्वदुःखविमोचिनि सर्वदुःखविमोचिन् सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वमृत्युप्रशमन् सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वविघ्ननिवारिन् सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वाङ्गसुन्दर सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वसौभाग्यदायिन् सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् कुलोत्तीर्णयोगिनि कुलोत्तीर्णयोगिन् (१३८७) सर्वज्ञे सर्वज्ञ सर्वशक्ते सर्वशक्त सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वैश्वर्यप्रद सर्वज्ञानमयि सर्वज्ञानमय सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वव्याधिविनाशिन् सर्वाधारस्वरूपे सर्वाधारस्वरूप सर्वपापहरे सर्वपापहर सर्वानन्दमयि सर्वानन्दमय सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वरक्षास्वरूपिन् सर्वेप्सितप्रदे सर्वेप्सितप्रद सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् निगर्भयोगिनि निगर्भयोगिन् (१५३७) वशिनि वशिन् कामेश्वरि कामेश्वर मोदिनि मोदिन् विमले विमलारूणेऽरुण जयिनि जयिन् सर्वेश्वरि सर्वेश्वर कौलिनि कौलिन् सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् रहस्ययोगिनि रहस्ययोगिन् (१६१५) बाणिनि बाणिन् चापिनि चापिन् पाशिनि पाशिन्नङ्कुशिन्यङ्कुशिन् (१६३६) महाकामेश्वरि

महाकामेश्वर महावज्रेश्वरि महावज्रेश्वर महाभगमालिनि महाभगमालिन् महाश्रीसुन्दरि महाश्रीसुन्दर सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्नति-रहस्ययोगिन्यतिरहस्ययोगिन् (१७१०) श्रीश्रीमहाभट्टारिके श्रीश्रीमहाभट्टारक सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन् परापररहस्ययोगिनि परापररहस्ययोगिन् (१७७६) त्रिपुरे त्रिपुर त्रिपुरेशि त्रिपुरेश त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरसुन्दर त्रिपुरवासिनि त्रिपुरवासिन् त्रिपुराश्रीस्त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरमालिन् त्रिपुरासिद्धे त्रिपुरासिद्ध त्रिपुराम्ब त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि महात्रिपुर-सुन्दर (१८६६) महामहेश्वरि महामहेश्वर महामहाराज्ञि महामहाराज महामहाशक्ते महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहागुप्त महामहाज्ञप्ते महामहाज्ञप्त महामहानन्दे महामहानन्द महामहास्पन्दे महामहास्पन्द महामहाशये महामहाशय महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज (१९८८) नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (१९९७)

सप्तनवत्युत्तरनवशताधिकसहस्राक्षराणि ।

इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनसम्बुद्ध्यन्तमाला ।

१२ शुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमाला ।

स

श्री विजया नित्या

गजास्यस्कन्दजननीं सुजनार्तिविनाशिनीं ।
यजामहे प्रतिदिनं विजयां विश्वमोहिनीम् ॥

शुक्लद्वादश्याम् कृष्णचतुर्थ्याम्

अस्य श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमालामहामन्त्रस्य, बुद्धितत्त्वाधिष्ठायिविष्ण्वादित्यऋषये नमः। अत्यष्टिच्छन्दसे नमः। मोक्षदसकारभट्टारकपीठस्थितसकलजननीललितामहाभट्टारिकासकलेश्वरकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः। ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । सर्वस्तम्भनसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

देवि त्वद्भक्तमालोक्य शरीरेन्द्रियचेतसाम् ।
स्तम्भनाद्वैरिणः स्तब्धाः स्वस्वकार्यपराङ्मुखाः ॥

गायत्री

विजयादेव्यै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (३७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ हृदयदेवाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिरोदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिखादेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कवचदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नेत्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अस्त्रदेवाय नमः पादुकां पूजयामि (२०१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यक्लिन्नाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भेरुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वह्निवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिवा(शिव)दूत्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शिवा(शिव)दूताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरितायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्वरिताय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कुलसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्यायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्याय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नीलपताकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विजयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्रायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्यायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानित्याय नमः पादुकां पूजयामि (६४१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परमेश्वरपरमेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मित्रीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ षष्ठीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ उड्डीशमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चर्यानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लोपामुद्रामयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अगस्त्यमयाय नमः पादुकां पूजयामि (८५४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कालतापनमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धर्माचारमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मुक्तकेशीश्वरमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ दीपकलानाथमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विष्णुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रभाकरदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ तेजोदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मनोजदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कल्याणदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रत्नदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वासुदेवमयाय नमः पादुकां पूजयामि (१२१३)

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीरामानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अणिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ लघिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महिमासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ईशित्वसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशित्वसिद्धये नमः पादुका पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राकाम्यसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ भुक्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इच्छासिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्राप्तिसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्ध्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वकामसिद्धये नमः पादुकां पूजयामि (१५२६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्मयै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ब्राह्माय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमार्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौमाराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णवाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराह्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वाराहाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्र्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ माहेन्द्राय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः पादुकां पूजयामि (१७३८)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमहाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वखेचराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वबीजाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वयोनये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वत्रिखण्डाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ प्रकटयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२१०२)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बुद्ध्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अहङ्काराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शब्दाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्पर्शाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रूपाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रसाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गन्धाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चित्ताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ धैर्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्मृत्याकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नामाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बीजाकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आत्माकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अमृताकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ शरीराकर्षणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि (२६०१)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्तयोगिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गकुसुमाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमेखलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुरायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमदनातुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गरेखाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गवेगिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गाङ्कुशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अनङ्गमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ गुप्ततरयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (२९३७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसंक्षोभिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वविद्राविणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाकर्षिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वह्लादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वह्लादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्मोहिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वस्तम्भिने नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वजृम्भिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्ववशङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरञ्जिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वोन्मादिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्तिपूरणाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वमन्त्रमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सम्प्रदाययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (३४४४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसम्पत्प्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वप्रियङ्कराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वमङ्गलकारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वकामप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वदुःखविमोचिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वमृत्युप्रशमनाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वविघ्ननिवारिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वाङ्गसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वसौभाग्यदायिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ कुलोत्तीर्णयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (३८३४)
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वज्ञायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वज्ञाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वशक्त्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वैश्वर्यप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्लीं श्रीं ॐ सर्वज्ञानमयाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वव्याधिविनाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वाधारस्वरूपाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहरायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वपापहराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमय्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षास्वरूपिणे नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेप्सितप्रदाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ निगर्भयोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४२१७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मोदिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ विमलाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अरुणाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ जयिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ कौलिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वरोगहरचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ रहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४४८७)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ बाणिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ चापिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पाशिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अङ्कुशिने नमः पादुकां पूजयामि (४५८३)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाकामेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महावज्रेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाभगमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महाश्रीसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ अतिरहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४७८०)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ श्रीश्रीमहाभट्टारकाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ परापररहस्ययोगिने नमः पादुकां पूजयामि (४८९४)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेश्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरेशाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरवासिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रियै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराश्रिये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरमालिने नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरासिद्धाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुराम्बाय नमः पादुकां पूजयामि

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महात्रिपुरसुन्दराय नमः पादुकां पूजयामि (५१५९)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वर्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहेश्वराय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाराजाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्तयै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशक्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्तायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहागुप्ताय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तयै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाज्ञप्तये नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहानन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहास्पन्दाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयायै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाशयाय नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै नमः पादुकां पूजयामि
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय नमः पादुकां पूजयामि।(५४५६)
ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥(५४६५)

पञ्चषष्ट्याधिकचतुःशतोत्तरपञ्चसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुननमोऽन्तमाला ।

१३ शुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमाला ।

क

श्री सर्वमङ्गला नित्या

पार्वणेन्दुसन्निभाननां प्रदीप्तकुण्डलां
सर्वलोकपूजितांघ्रिदिव्यपङ्कजां शिवाम् ।
सर्वलोकनायिकां समस्तसौख्यादायिकां
प्रसन्नविग्रहां सदा स्मरामि सर्वमङ्गलाम् ॥

शुक्लत्रयोदश्यां कृष्णतृतीयायां

अस्य श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमालामहामन्त्रस्य, चित्ततत्त्वाधिष्ठायिब्रह्मात्मने प्रातरादित्यऋषये नमः । धृतिच्छन्दसे नमः । राजसककारभट्टारकपीठस्थितकामकोटिललितामहाभट्टारिकाकरुणाकरकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । मम धर्मार्थकाममोक्षचतुष्टयसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्चेति चतुष्टयम् ।
तव भक्तः स्वभक्तेभ्यः प्रयच्छत्यप्रयासतः ॥

गायत्री

सर्वमङ्गलायै विद्महे चन्द्रात्मिकायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा

त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (२३) हृदयदेव्यै स्वाहा

हृदयदेवाय स्वाहा
शिरोदेव्यै स्वाहा
शिरोदेवाय स्वाहा
शिखादेव्यै स्वाहा
शिखादेवाय स्वाहा
कवचदेव्यै स्वाहा
कवचदेवाय स्वाहा
नेत्रदेव्यै स्वाहा
नेत्रदेवाय स्वाहा
अस्त्रदेव्यै स्वाहा
अस्त्रदेवाय स्वाहा (१०३)
कामेश्वर्यै स्वाहा
कामेश्वराय स्वाहा
भगमालिन्यै स्वाहा
भगमालिने स्वाहा
नित्यक्लिन्नायै स्वाहा
नित्यक्लिन्नाय स्वाहा
भेरुण्डायै स्वाहा
भेरुण्डाय स्वाहा
वह्निवासिन्यै स्वाहा
वह्निवासिने स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
शिवा(शिव)दूत्यै स्वाहा
शिवा(शिव)दूताय स्वाहा
त्वरितायै स्वाहा
त्वरिताय स्वाहा

कुलसुन्दर्यै स्वाहा
कुलसुन्दराय स्वाहा
नित्यायै स्वाहा
नित्याय स्वाहा
नीलपताकायै स्वाहा
नीलपताकाय स्वाहा
विजयायै स्वाहा
विजयाय स्वाहा
सर्वमङ्गलायै स्वाहा
सर्वमङ्गलाय स्वाहा
ज्वालामालिन्यै स्वाहा
ज्वालामालिने स्वाहा
चित्रायै स्वाहा
चित्राय स्वाहा
महानित्यायै स्वाहा
महानित्याय स्वाहा (१३९)
परमेश्वरपरमेश्वर्यै स्वाहा
परमेश्वरपरमेश्वराय स्वाहा
मित्रीशमय्यै स्वाहा
मित्रीशमयाय स्वाहा
षष्ठीशमय्यै स्वाहा
षष्ठीशमयाय स्वाहा
उड्डीशमय्यै स्वाहा
उड्डीशमयाय स्वाहा
चर्यानाथमय्यै स्वाहा
चर्यानाथमयाय स्वाहा
लोपामुद्रामय्यै स्वाहा

लोपामुद्रामयाय स्वाहा
अगस्त्यमय्यै स्वाहा
अगस्त्यमयाय स्वाहा
कालतापनमय्यै स्वाहा
कालतापनमयाय स्वाहा
धर्माचारमय्यै स्वाहा
धर्माचारमयाय स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमय्यै स्वाहा
मुक्तकेशीश्वरमयाय स्वाहा
दीपकलानाथमय्यै स्वाहा
दीपकलानाथमयाय स्वाहा
विष्णुदेवमय्यै स्वाहा
विष्णुदेवमयाय स्वाहा
प्रभाकरदेवमय्यै स्वाहा
प्रभाकरदेवमयाय स्वाहा
तेजोदेवमय्यै स्वाहा
तेजोदेवमयाय स्वाहा
मनोजदेवमय्यै स्वाहा
मनोजदेवमयाय स्वाहा
कल्याणदेवमय्यै स्वाहा
कल्याणदेवमयाय स्वाहा
रत्नदेवमय्यै स्वाहा
रत्नदेवमयाय स्वाहा
वासुदेवमय्यै स्वाहा
वासुदेवमयाय स्वाहा (६३९)
श्रीरामानन्दमय्यै स्वाहा
श्रीरामानन्दमयाय स्वाहा

अणिमासिद्धयै स्वाहा
अणिमासिद्धये स्वाहा
लघिमासिद्धयै स्वाहा
लघिमासिद्धये स्वाहा
महिमासिद्धयै स्वाहा
महिमासिद्धये स्वाहा
ईशत्वसिद्धयै स्वाहा
ईशित्वसिद्धये स्वाहा
वशित्वसिद्धयै स्वाहा
वशित्वसिद्धये स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धयै स्वाहा
प्राकाम्यसिद्धये स्वाहा
भुक्तिसिद्धयै स्वाहा
भुक्तिसिद्धये स्वाहा
इच्छासिद्धयै स्वाहा
इच्छासिद्धये स्वाहा
प्राप्तिसिद्धयै स्वाहा
प्राप्तिसिद्धये स्वाहा
सर्वकामसिद्धयै स्वाहा
सर्वकामसिद्धये स्वाहा (७९८)
ब्राह्मयै स्वाहा
ब्राह्माय स्वाहा
माहेश्वर्यै स्वाहा
माहेश्वराय स्वाहा
कौमार्यै स्वाहा
कौमाराय स्वाहा
वैष्णव्यै स्वाहा

वैष्णवाय स्वाहा
वाराह्यै स्वाहा
वाराहाय स्वाहा
माहेन्द्र्यै स्वाहा
माहेन्द्राय स्वाहा
चामुण्डायै स्वाहा
चामुण्डाय स्वाहा
महालक्ष्म्यै स्वाहा
महालक्ष्म्ये स्वाहा (८८८)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशायै स्वाहा
सर्वमहाङ्कुशाय स्वाहा
सर्वखेचर्यै स्वाहा
सर्वखेचराय स्वाहा
सर्वबीजायै स्वाहा
सर्वबीजाय स्वाहा
सर्वयोन्यै स्वाहा
सर्वयोनये स्वाहा
सर्वत्रिखण्डायै स्वाहा
सर्वत्रिखण्डाय स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिने स्वाहा
प्रकटयोगिन्यै स्वाहा
प्रकटयोगिने स्वाहा (१०८३)
कामाकर्षण्यै स्वाहा
कामाकर्षणाय स्वाहा
बुद्ध्याकर्षण्यै स्वाहा
बुद्ध्याकर्षणाय स्वाहा
अहङ्काराकर्षण्यै स्वाहा
अहङ्काराकर्षणाय स्वाहा
शब्दाकर्षण्यै स्वाहा
शब्दाकर्षणाय स्वाहा
स्पर्शाकर्षण्यै स्वाहा
स्पर्शाकर्षणाय स्वाहा
रूपाकर्षण्यै स्वाहा
रूपाकर्षणाय स्वाहा
रसाकर्षण्यै स्वाहा
रसाकर्षणाय स्वाहा
गन्धाकर्षण्यै स्वाहा
गन्धाकर्षणाय स्वाहा
चित्ताकर्षण्यै स्वाहा
चित्ताकर्षणाय स्वाहा
धैर्याकर्षण्यै स्वाहा
धैर्याकर्षणाय स्वाहा
स्मृत्याकर्षण्यै स्वाहा

स्मृत्याकर्षणाय स्वाहा
नामाकर्षण्यै स्वाहा
नामाकर्षणाय स्वाहा
बीजाकर्षण्यै स्वाहा
बीजाकर्षणाय स्वाहा
आत्माकर्षण्यै स्वाहा
आत्माकर्षणाय स्वाहा
अमृताकर्षण्यै स्वाहा
अमृताकर्षणाय स्वाहा
शरीराकर्षण्यै स्वाहा
शरीराकर्षणाय स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिने स्वाहा (१३५५)
गुप्तयोगिन्यै स्वाहा
गुप्तयोगिने स्वाहा
अनङ्गकुसुमायै स्वाहा
अनङ्गकुसुमाय स्वाहा
अनङ्गमेखलायै स्वाहा
अनङ्गमेखलाय स्वाहा
अनङ्गमदनायै स्वाहा
अनङ्गमदनाय स्वाहा
अनङ्गमदनातुरायै स्वाहा
अनङ्गमदनातुराय स्वाहा
अनङ्गरेखायै स्वाहा
अनङ्गरेखाय स्वाहा
अनङ्गवेगिन्यै स्वाहा
अनङ्गवेगिने स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशायै स्वाहा
अनङ्गाङ्कुशाय स्वाहा
अनङ्गमालिन्यै स्वाहा
अनङ्गमालिने स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिने स्वाहा
गुप्ततरयोगिन्यै स्वाहा
गुप्ततरयोगिने स्वाहा (१५३७)
सर्वसंक्षोभिण्यै स्वाहा
सर्वसंक्षोभिणे स्वाहा
सर्वविद्राविण्यै स्वाहा
सर्वविद्राविणे स्वाहा
सर्वाकर्षिण्यै स्वाहा
सर्वाकर्षिणे स्वाहा
सर्वह्लादिन्यै स्वाहा
सर्वह्लादिने स्वाहा
सर्वसम्मोहिन्यै स्वाहा
सर्वसम्मोहिने स्वाहा
सर्वस्तम्भिन्यै स्वाहा
सर्वस्तम्भिने स्वाहा
सर्वजृम्भिण्यै स्वाहा
सर्वजृम्भिणे स्वाहा
सर्ववशङ्कर्यै स्वाहा
सर्ववशङ्कराय स्वाहा
सर्वरञ्जिन्यै स्वाहा
सर्वरञ्जिने स्वाहा

सर्वोन्मादिन्यै स्वाहा
सर्वोन्मादिने स्वाहा
सर्वार्थसाधिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधिने स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरण्यै स्वाहा
सर्वसम्पत्तिपूरणाय स्वाहा
सर्वमन्त्रमय्यै स्वाहा
सर्वमन्त्रमयाय स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै स्वाहा
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिने स्वाहा
सम्प्रदाययोगिन्यै स्वाहा
सम्प्रदाययोगिने स्वाहा (१८०९)
सर्वसिद्धिप्रदायै स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदायै स्वाहा
सर्वसम्पत्प्रदाय स्वाहा
सर्वप्रियङ्कर्यै स्वाहा
सर्वप्रियङ्कराय स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा
सर्वमङ्गलकारिणे स्वाहा
सर्वकामप्रदायै स्वाहा
सर्वकामप्रदाय स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिन्यै स्वाहा
सर्वदुःखविमोचिने स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमन्यै स्वाहा
सर्वमृत्युप्रशमनाय स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिण्यै स्वाहा
सर्वविघ्ननिवारिणे स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दर्यै स्वाहा
सर्वाङ्गसुन्दराय स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिन्यै स्वाहा
सर्वसौभाग्यदायिने स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिने स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिन्यै स्वाहा
कुलोत्तीर्णयोगिने स्वाहा (२०४२)
सर्वज्ञायै स्वाहा
सर्वज्ञाय स्वाहा
सर्वशक्त्यै स्वाहा
सर्वशक्तये स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदायै स्वाहा
सर्वैश्वर्यप्रदाय स्वाहा
सर्वज्ञानमय्यै स्वाहा
सर्वज्ञानमयाय स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिन्यै स्वाहा
सर्वव्याधिविनाशिने स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपायै स्वाहा
सर्वाधारस्वरूपाय स्वाहा
सर्वपापहरायै स्वाहा
सर्वपापहराय स्वाहा
सर्वानन्दमय्यै स्वाहा
सर्वानन्दमयाय स्वाहा

सर्वरक्षास्वरूपिण्यै स्वाहा
सर्वरक्षास्वरूपिणे स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदायै स्वाहा
सर्वेप्सितप्रदाय स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिने स्वाहा
निगर्भयोगिन्यै स्वाहा
निगर्भयोगिने स्वाहा (२२५६)
वशिन्यै स्वाहा
वशिने स्वाहा
कामेश्वर्यै स्वाहा
कामेश्वराय स्वाहा
मोदिन्यै स्वाहा
मोदिने स्वाहा
विमलायै स्वाहा
विमलाय स्वाहा
अरुणायै स्वाहा
अरुणाय स्वाहा
जयिन्यै स्वाहा
जयिने स्वाहा
सर्वेश्वर्यै स्वाहा
सर्वेश्वराय स्वाहा
कौलिन्यै स्वाहा
कौलिने स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वरोगहरचक्रस्वामिने स्वाहा

रहस्ययोगिन्यै स्वाहा
रहस्ययोगिने स्वाहा (२३८७)
बाणिन्यै स्वाहा
बाणिने स्वाहा
चापिन्यै स्वाहा
चापिने स्वाहा
पाशिन्यै स्वाहा
पाशिने स्वाहा
अङ्कुशिन्यै स्वाहा
अङ्कुशिने स्वाहा (२४२७)
महाकामेश्वर्यै स्वाहा
महाकामेश्वराय स्वाहा
महावज्रेश्वर्यै स्वाहा
महावज्रेश्वराय स्वाहा
महाभगमालिन्यै स्वाहा
महाभगमालिने स्वाहा
महाश्रीसुन्दर्यै स्वाहा
महाश्रीसुन्दराय स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिने स्वाहा
अतिरहस्ययोगिन्यै स्वाहा
अतिरहस्ययोगिने स्वाहा (२५४०)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै स्वाहा
श्रीश्रीमहाभट्टारकाय स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन्यै स्वाहा
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिने स्वाहा

परापररहस्ययोगिन्यै स्वाहा
परापररहस्ययोगिने स्वाहा (२६१२)
त्रिपुरायै स्वाहा
त्रिपुराय स्वाहा
त्रिपुरेश्यै स्वाहा
त्रिपुरेशाय स्वाहा
त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
त्रिपुरसुन्दराय स्वाहा
त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा
त्रिपुरवासिने स्वाहा
त्रिपुराश्रियै स्वाहा
त्रिपुराश्रिये स्वाहा
त्रिपुरमालिन्यै स्वाहा
त्रिपुरमालिने स्वाहा
त्रिपुरासिद्धायै स्वाहा
त्रिपुरासिद्धाय स्वाहा
त्रिपुराम्बायै स्वाहा
त्रिपुराम्बाय स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
महात्रिपुरसुन्दराय स्वाहा (२७५१)
महामहेश्वर्यै स्वाहा
महामहेश्वराय स्वाहा
महामहाराज्ञ्यै स्वाहा
महामहाराजाय स्वाहा
महामहाशक्त्यै स्वाहा
महामहाशक्तये स्वाहा
महामहागुप्तायै स्वाहा
महामहागुप्ताय स्वाहा
महामहाज्ञप्त्यै स्वाहा
महामहाज्ञप्तये स्वाहा
महामहानन्दायै स्वाहा
महामहानन्दाय स्वाहा
महामहास्पन्दायै स्वाहा
महामहास्पन्दाय स्वाहा
महामहाशयायै स्वाहा
महामहाशयाय स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञ्यै स्वाहा
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजाय स्वाहा (२९२२)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (२९३१)

एकत्रिंशदधिकनवशतोत्तरद्विसहस्राक्षराणि ।

इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनस्वाहान्तमाला ।

१४ शुद्धशक्तिशिवमिथुनतर्पणान्तमाला ।

ल

श्री ज्वालामालिनी नित्या

फालाक्षाब्जभवेन्द्रविष्णुनमितां फट्कारवर्णात्मिकां
मालां भक्तजनार्तिमङ्गलकरां भाग्यप्रदां श्यामलाम् ।
मूलाधारगतां त्रिलोकजननीं मुक्तिप्रदां कामदां
वन्दे ज्वालामालिनीं प्रतिदिनं पद्मासनस्थां शिवाम् ॥

शुक्लचर्तुदश्याम् कृष्णद्वितीयायाम्

अस्य **श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनतर्पणान्तमालामहामन्त्रस्य**, प्रधानतत्त्वधिष्ठायि-विष्णवात्मने मध्याह्नादित्यऋषये नमः । अतिधृतिच्छन्दसे नमः । राज-सलकारभट्टारकपीठस्थितलीलावती ललितामहाभट्टारिकालावण्यनायक-कामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । मम नित्यानन्दसिद्धौ विनियोगः ।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम् -

अलौकिकं लौकिकं च ह्यानन्दद्वयनिर्मलम् ।
सुलभं परमेशानि त्वत्पादौ भजतां नृणाम् ॥

गायत्री

ज्वालामालिन्यै विद्महे महाज्वालायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा -

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि(२६) हृदयदेवीं तर्पयामि

हृदयदेवं तर्पयामि
शिरोदेवीं तर्पयामि
शिरोदेवं तर्पयामि
शिखादेवीं तर्पयामि
शिखादेवं तर्पयामि
कवचदेवीं तर्पयामि
कवचदेवं तर्पयामि
नेत्रदेवीं तर्पयामि
नेत्रदेवं तर्पयामि
अस्त्रदेवीं तर्पयामि
अस्त्रदेवं तर्पयामि (१२४)
कामेश्वरीं तर्पयामि
कामेश्वरं तर्पयामि
भगमालिनीं तर्पयामि
भगमालिनं तर्पयामि
नित्यक्लिन्नां तर्पयामि
नित्यक्लिन्नं तर्पयामि
भेरुण्डां तर्पयामि
भेरुण्डं तर्पयामि
वह्निवासिनीं तर्पयामि
वह्निवासिनं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
शिवा(शिव)दूतीं तर्पयामि
शिवा(शिव)दूतं तर्पयामि
त्वरितां तर्पयामि
त्वरितं तर्पयामि
कुलसुन्दरीं तर्पयामि
कुलसुन्दरं तर्पयामि
नित्यां तर्पयामि
नित्यं तर्पयामि
नीलपताकां तर्पयामि
नीलपताकं तर्पयामि
विजयां तर्पयामि
विजयं तर्पयामि
सर्वमङ्गलां तर्पयामि
सर्वमङ्गलं तर्पयामि
ज्वालामालिनीं तर्पयामि
ज्वालामालिनं तर्पयामि
चित्रां तर्पयामि
चित्रं तर्पयामि
महानित्यां तर्पयामि
महानित्यं तर्पयामि (३८२)
परमेश्वरपरमेश्वरीं तर्पयामि
परमेश्वरपरमेश्वरं तर्पयामि
मित्रीशमयीं तर्पयामि
मित्रीशमयं तर्पयामि
षष्ठीशमयीं तर्पयामि
षष्ठीशमयं तर्पयामि
उड्डीशमयीं तर्पयामि
उड्डीशमयं तर्पयामि
चर्यानाथमयीं तर्पयामि

चर्यानाथमयं तर्पयामि	वासुदेवमयं तर्पयामि (७५६)
लोपामुद्रामयीं तर्पयामि	श्रीरामानन्दमयीं तर्पयामि
लोपामुद्रामयं तर्पयामि	श्रीरामानन्दमयं तर्पयामि
अगस्त्यमयीं तर्पयामि	अणिमासिद्धिं तर्पयामि
अगस्त्यमयं तर्पयामि	अणिमासिद्धिं तर्पयामि
कालतापनमयीं तर्पयामि	लघिमासिद्धिं तर्पयामि
कालतापनमयं तर्पयामि	लघिमासिद्धिं तर्पयामि
धर्माचारमयीं तर्पयामि	महिमासिद्धिं तर्पयामि
धर्माचारमयं तर्पयामि	महिमासिद्धिं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयीं तर्पयामि	ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
मुक्तकेशीश्वरमयं तर्पयामि	ईशित्वसिद्धिं तर्पयामि
दीपकलानाथमयीं तर्पयामि	वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
दीपकलानाथमयं तर्पयामि	वशित्वसिद्धिं तर्पयामि
विष्णुदेवमयीं तर्पयामि	प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
विष्णुदेवमयं तर्पयामि	प्राकाम्यसिद्धिं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयीं तर्पयामि	भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
प्रभाकरदेवमयं तर्पयामि	भुक्तिसिद्धिं तर्पयामि
तेजोदेवमयीं तर्पयामि	इच्छासिद्धिं तर्पयामि
तेजोदेवमयं तर्पयामि	इच्छासिद्धिं तर्पयामि
मनोजदेवमयीं तर्पयामि	प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
मनोजदेवमयं तर्पयामि	प्राप्तिसिद्धिं तर्पयामि
कल्याणदेवमयीं तर्पयामि	सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि
कल्याणदेवमयं तर्पयामि	सर्वकामसिद्धिं तर्पयामि (९४८)
रत्नदेवमयीं तर्पयामि	ब्राह्मीं तर्पयामि
रत्नदेवमयं तर्पयामि	ब्राह्मं तर्पयामि
वासुदेवमयीं तर्पयामि	माहेश्वरीं तर्पयामि

माहेश्वरं तर्पयामि
कौमारीं तर्पयामि
कौमारं तर्पयामि
वैष्णवीं तर्पयामि
वैष्णवं तर्पयामि
वाराहीं तर्पयामि
वाराहं तर्पयामि
माहेन्द्रीं तर्पयामि
माहेन्द्रं तर्पयामि
चामुण्डां तर्पयामि
चामुण्डं तर्पयामि
महालक्ष्मीं तर्पयामि
महालक्ष्मीं तर्पयामि (१०६२)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशां तर्पयामि
सर्वमहाङ्कुशं तर्पयामि
सर्वखेचरीं तर्पयामि
सर्वखेचरं तर्पयामि
सर्वबीजां तर्पयामि
सर्वबीजं तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वयोनिं तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डां तर्पयामि
सर्वत्रिखण्डं तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनं तर्पयामि
प्रकटयोगिनीं तर्पयामि
प्रकटयोगिनं तर्पयामि (१२९६)
कामाकर्षणीं तर्पयामि
कामाकर्षणं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणीं तर्पयामि
बुद्ध्याकर्षणं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणीं तर्पयामि
अहङ्काराकर्षणं तर्पयामि
शब्दाकर्षणीं तर्पयामि
शब्दाकर्षणं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणीं तर्पयामि
स्पर्शाकर्षणं तर्पयामि
रूपाकर्षणीं तर्पयामि
रूपाकर्षणं तर्पयामि
रसाकर्षणीं तर्पयामि
रसाकर्षणं तर्पयामि
गन्धाकर्षणीं तर्पयामि

गन्धाकर्षणं तर्पयामि
चित्ताकर्षणीं तर्पयामि
चित्ताकर्षणं तर्पयामि
धैर्याकर्षणीं तर्पयामि
धैर्याकर्षणं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणीं तर्पयामि
स्मृत्याकर्षणं तर्पयामि
नामाकर्षणीं तर्पयामि
नामाकर्षणं तर्पयामि
बीजाकर्षणीं तर्पयामि
बीजाकर्षणं तर्पयामि
आत्माकर्षणीं तर्पयामि
आत्माकर्षणं तर्पयामि
अमृताकर्षणीं तर्पयामि
अमृताकर्षणं तर्पयामि
शरीराकर्षणीं तर्पयामि
शरीराकर्षणं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
(१६२०)
गुप्तयोगिनीं तर्पयामि
गुप्तयोगिनं तर्पयामि
अनङ्गकुसुमां तर्पयामि
अनङ्गकुसुमं तर्पयामि
अनङ्गमेखलां तर्पयामि
अनङ्गमेखलं तर्पयामि

अनङ्गमदनां तर्पयामि
अनङ्गमदनं तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरां तर्पयामि
अनङ्गमदनातुरं तर्पयामि
अनङ्गरेखां तर्पयामि
अनङ्गरेखं तर्पयामि
अनङ्गवेगिनीं तर्पयामि
अनङ्गवेगिनं तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशां तर्पयामि
अनङ्गाङ्कुशं तर्पयामि
अनङ्गमालिनीं तर्पयामि
अनङ्गमालिनं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनीं तर्पयामि
गुप्ततरयोगिनं तर्पयामि (१८३४)
सर्वसंक्षोभिणीं तर्पयामि
सर्वसंक्षोभिणं तर्पयामि
सर्वविद्राविणीं तर्पयामि
सर्वविद्राविणं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणीं तर्पयामि
सर्वाकर्षिणं तर्पयामि
सर्वह्लादिनीं तर्पयामि
सर्वह्लादिनं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनीं तर्पयामि
सर्वसम्मोहिनं तर्पयामि

सर्वस्तम्भिनीं तर्पयामि
सर्वस्तम्भिनं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणीं तर्पयामि
सर्वजृम्भिणं तर्पयामि
सर्ववशङ्करीं तर्पयामि
सर्ववशङ्करं तर्पयामि
सर्वरञ्जिनीं तर्पयामि
सर्वरञ्जिनं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनीं तर्पयामि
सर्वोन्मादिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधिनं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणीं तर्पयामि
सर्वसम्पत्तिपूरणं तर्पयामि
सर्वमन्त्रमयीं तर्पयामि
सर्वमन्त्रमयं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयंकरीं तर्पयामि
सर्वद्वन्द्वक्षयंकरं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनीं तर्पयामि
सम्प्रदाययोगिनं तर्पयामि (२१६६)
सर्वसिद्धिप्रदां तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदं तर्पयामि
सर्वसम्पत्प्रदां तर्पयामि
सर्वसम्पत्प्रदं तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करीं तर्पयामि
सर्वप्रियङ्करं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणीं तर्पयामि
सर्वमङ्गलकारिणं तर्पयामि
सर्वकामप्रदां तर्पयामि
सर्वकामप्रदं तर्पयामि
सर्वदुःखविमोचिनीं तर्पयामि
सर्वदुःखविमोचिनं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनीं तर्पयामि
सर्वमृत्युप्रशमनं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणीं तर्पयामि
सर्वविघ्ननिवारिणं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरीं तर्पयामि
सर्वाङ्गसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनीं तर्पयामि
सर्वसौभाग्यदायिनं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनीं तर्पयामि
कुलोत्तीर्णयोगिनं तर्पयामि (२४३८)
सर्वज्ञां तर्पयामि
सर्वज्ञं तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वशक्तिं तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदां तर्पयामि
सर्वैश्वर्यप्रदं तर्पयामि
सर्वज्ञानमयीं तर्पयामि
सर्वज्ञानमयं तर्पयामि

सर्वव्याधिविनाशिनीं तर्पयामि
सर्वव्याधिविनाशिनं तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपां तर्पयामि
सर्वाधारस्वरूपं तर्पयामि
सर्वपापहरां तर्पयामि
सर्वपापहरं तर्पयामि
सर्वानन्दमयीं तर्पयामि
सर्वानन्दमयं तर्पयामि
सर्वरक्षास्वरूपिणीं तर्पयामि
सर्वरक्षास्वरूपिणं तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदां तर्पयामि
सर्वेप्सितप्रदं तर्पयामि
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
निगर्भयोगिनीं तर्पयामि
निगर्भयोगिनं तर्पयामि (२६८८)
वशिनीं तर्पयामि
वशिनं तर्पयामि
कामेश्वरीं तर्पयामि
कामेश्वरं तर्पयामि
मोदिनीं तर्पयामि
मोदिनं तर्पयामि
विमलां तर्पयामि
विमलं तर्पयामि
अरुणां तर्पयामि
अरुणं तर्पयामि
जयिनीं तर्पयामि
जयिनं तर्पयामि
सर्वेश्वरीं तर्पयामि
सर्वेश्वरं तर्पयामि
कौलिनीं तर्पयामि
कौलिनं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनं तर्पयामि
रहस्ययोगिनीं तर्पयामि
रहस्ययोगिनं तर्पयामि (२८५२)
बाणिनीं तर्पयामि
बाणिनं तर्पयामि
चापिनीं तर्पयामि
चापिनं तर्पयामि
पाशिनीं तर्पयामि
पाशिनं तर्पयामि
अङ्कुशिनीं तर्पयामि
अङ्कुशिनं तर्पयामि (२९०८)
महाकामेश्वरीं तर्पयामि
महाकामेश्वरं तर्पयामि
महावज्रेश्वरीं तर्पयामि
महावज्रेश्वरं तर्पयामि
महाभगमालिनीं तर्पयामि
महाभगमालिनं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरीं तर्पयामि
महाश्रीसुन्दरं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनं तर्पयामि

अतिरहस्ययोगिनीं तर्पयामि
अतिरहस्ययोगिनं तर्पयामि (३०४२)
श्रीश्रीमहाभट्टारिकां तर्पयामि
श्रीश्रीमहाभट्टारकं तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनीं तर्पयामि
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनीं तर्पयामि
परापररहस्ययोगिनं तर्पयामि (३१२४)
त्रिपुरां तर्पयामि
त्रिपुरं तर्पयामि
त्रिपुरेशीं तर्पयामि
त्रिपुरेशं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
त्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनीं तर्पयामि
त्रिपुरवासिनं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुराश्रियं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनीं तर्पयामि
त्रिपुरमालिनं तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धां तर्पयामि
त्रिपुरासिद्धं तर्पयामि
त्रिपुराम्बां तर्पयामि
त्रिपुराम्बं तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि
महात्रिपुरसुन्दरं तर्पयामि (३२९०)
महामहेश्वरीं तर्पयामि
महामहेश्वरं तर्पयामि
महामहाराज्ञीं तर्पयामि
महामहाराजं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहाशक्तिं तर्पयामि
महामहागुप्तां तर्पयामि
महामहागुप्तं तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहाज्ञप्तिं तर्पयामि
महामहानन्दां तर्पयामि
महामहानन्दं तर्पयामि
महामहास्पन्दां तर्पयामि
महामहास्पन्दं तर्पयामि
महामहाशयां तर्पयामि
महामहाशयं तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञीं तर्पयामि
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राजं तर्पयामि
(३४८४)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ (३४९३)

त्रिनवत्यधिकचतुःशतोत्तरत्रिसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनतर्पणान्तमाला ।

१५ शुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमाला ।

ह्रीं

श्री चित्रा नित्या

चित्रां चन्द्रनिभाननां गुणमयीं चित्राम्भरालङ्कृतां
चिद्रूपां परदेवतां स्मितमुखीं चिन्ताकुलध्वंसिनीम् ।
अद्वैतामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां
सत्यां सामजराजमन्दगमनां सर्वेश्वरीं भावये ॥

पूर्णिमायाम् कृष्णप्रतिपदि

अस्य श्रीशुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमालामहामन्त्रस्य, पुरुषतत्त्वाधिष्ठायिशिवात्मने सायमादित्यऋषये नमः । कृतिच्छन्दसे नमः । राजसह्रींकारपीठस्थितहरेश्वरीललितामहाभट्टारिकाहिरण्यबाहुकामेश्वरमहाभट्टारकमिथुनाय देवतायै नमः । ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः, सौः कीलकम् । भोगमोक्षसिद्धौ विनियोगः।

ह्रां इत्यादि करहृदयादिन्यासः-

ध्यानम्-

या भोगदायिनी देवी जीवन्मुक्तिप्रदा न सा ।
मोक्षदा तु न भोगाय ललिता तूभयप्रदा ॥

गायत्री

विचित्रायै विद्महे महानित्यायै धीमहि ।
तन्नो नित्या प्रचोदयात् ।

लमित्यादि पञ्चपूजा-

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि जय जय

त्रिपुरसुन्दर जय जय (२६) हृदयदेवि जय जय

हृदयदेव जय जय
शिरोदेवि जय जय
शिरोदेव जय जय
शिखादेवि जय जय
शिखादेव जय जय
कवचदेवि जय जय
कवचदेव जय जय
नेत्रदेवि जय जय
नेत्रदेव जय जय
अस्त्रदेवि जय जय
अस्त्रदेव जय जय (१२४)
कामेश्वरि जय जय
कामेश्वर जय जय
भगमालिनि जय जय
भगमालिन् जय जय
नित्यक्लिन्ने जय जय
नित्यक्लिन्न जय जय
भेरुण्डे जय जय
भेरुण्ड जय जय
वह्निवासिनि जय जय
वह्निवासिन् जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
शिवा(शिव)दूति जय जय
शिवा(शिव)दूत जय जय
त्वरिते जय जय
त्वरित जय जय
कुलसुन्दरि जय जय
कुलसुन्दर जय जय
नित्ये जय जय
नित्य जय जय
नीलपताके जय जय
नीलपताक जय जय
विजये जय जय
विजय जय जय
सर्वमङ्गले जय जय
सर्वमङ्गल जय जय
ज्वालामालिनि जय जय
ज्वालामालिन् जय जय
चित्रे जय जय
चित्र जय जय
महानित्ये जय जय
महानित्य जय जय (३७९)
परमेश्वरपरमेश्वरि जय जय
परमेश्वरपरमेश्वर जय जय
मित्रीशमयि जय जय
मित्रीशमय जय जय
षष्ठीशमयी जय जय
षष्ठीशमय जय जय
उड्डीशमयी जय जय
उड्डीशमय जय जय
चर्यानाथमयि जय जय

चर्यानाथमय जय जय	श्रीरामानन्दमयि जय जय
लोपामुद्रामयि जय जय	श्रीरामानन्दमय जय जय
लोपामुद्रामय जय जय	अणिमासिद्धे जय जय
अगस्त्यमयि जय जय	अणिमासिद्धे जय जय
अगस्त्यमय जय जय	लघिमासिद्धे जय जय
कालतापनमयि जय जय	लघिमासिद्धे जय जय
कालतापनमय जय जय	महिमासिद्धे जय जय
धर्माचारमयि जय जय	महिमासिद्धे जय जय
धर्माचारमय जय जय	ईशित्वसिद्धे जय जय
मुक्तकेशीश्वरमयि जय जय	ईशित्वसिद्धे जय जय
मुक्तकेशीश्वरमय जय जय	वशित्वसिद्धे जय जय
दीपकलानाथमयि जय जय	वशित्वसिद्धे जय जय
दीपकलानाथमय जय जय	प्राकाम्यसिद्धे जय जय
विष्णुदेवमयि जय जय	प्राकाम्यसिद्धे जय जय
विष्णुदेवमय जय जय	भुक्तिसिद्धे जय जय
प्रभाकरदेवमयि जय जय	भुक्तिसिद्धे जय जय
प्रभाकरदेवमय जय जय	इच्छासिद्धे जय जय
तेजोदेवमयि जय जय	इच्छासिद्धे जय जय
तेजोदेवमय जय जय	प्राप्तिसिद्धे जय जय
मनोजदेवमयि जय जय	प्राप्तिसिद्धे जय जय
मनोजदेवमय जय जय	सर्वकामसिद्धे जय जय
कल्याणदेवमयि जय जय	सर्वकामसिद्धे जय जय (९४५)
कल्याणदेवमय जय जय	ब्राह्मि जय जय
रत्नदेवमयि जय जय	ब्राह्म जय जय
रत्नदेवमय जय जय	माहेश्वरि जय जय
वासुदेवमयि जय जय	माहेश्वर जय जय
वासुदेवमय जय जय (७५३)	कौमारि जय जय

कौमार जय जय
वैष्णवि जय जय
वैष्णव जय जय
वाराहि जय जय
वाराह जय जय
माहेन्द्रि जय जय
माहेन्द्र जय जय
चामुण्डे जय जय
चामुण्ड जय जय
महालक्ष्मी जय जय
महालक्ष्मी जय जय (१०५९)
सर्वसंक्षोभिणि जय जय
सर्वसंक्षोभिन् जय जय
सर्वविद्राविणि जय जय
सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिणि जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वोन्मादिन् जय जय
सर्वमहाङ्कुशे जय जय
सर्वमहाङ्कुश जय जय
सर्वखेचरि जय जय
सर्वखेचर जय जय
सर्वबीजे जय जय
सर्वबीज जय जय

सर्वयोने जय जय
सर्वयोने जय जय
सर्वत्रिखण्डे जय जय
सर्वत्रिखण्ड जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि जय जय
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन् जय जय
प्रकटयोगिनि जय जय
प्रकटयोगिन् जय जय (१२८७)
कामाकर्षणि जय जय
कामाकर्षण जय जय
बुद्ध्याकर्षणि जय जय
बुद्ध्याकर्षण जय जय
अहङ्काराकर्षणि जय जय
अहङ्काराकर्षण जय जय
शब्दाकर्षणि जय जय
शब्दाकर्षण जय जय
स्पर्शाकर्षणि जय जय
स्पर्शाकर्षण जय जय
रूपाकर्षणि जय जय
रूपाकर्षण जय जय
रसाकर्षणि जय जय
रसाकर्षण जय जय
गन्धाकर्षणि जय जय
गन्धाकर्षण जय जय
चित्ताकर्षणि जय जय
चित्ताकर्षण जय जय
धैर्याकर्षणि जय जय

धैर्याकर्षण जय जय
स्मृत्याकर्षणि जय जय
स्मृत्याकर्षण जय जय
नामाकर्षणि जय जय
नामाकर्षण जय जय
बीजाकर्षणि जय जय
बीजाकर्षण जय जय
आत्माकर्षणि जय जय
आत्माकर्षण जय जय
अमृताकर्षणि जय जय
अमृताकर्षण जय जय
शरीराकर्षणि जय जय
शरीराकर्षण जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन् जय जय (१६१०)
गुप्तयोगिनि जय जय
गुप्तयोगिन् जय जय
अनङ्गकुसुमे जय जय
अनङ्गकुसुमा जय जय
अनङ्गमेखले जय जय
अनङ्गमेखला जय जय
अनङ्गमदने जय जय
अनङ्गमदन जय जय
अनङ्गमदनातुरे जय जय
अनङ्गमदनातुर जय जय
अनङ्गरेखे जय जय
अनङ्गरेख जय जय
अनङ्गवेगिनि जय जय
अनङ्गवेगिन् जय जय
अनङ्गाङ्कुशे जय जय
अनङ्गाङ्कुश जय जय
अनङ्गमालिनि जय जय
अनङ्गमालिन् जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन् जय जय
गुप्ततरयोगिनि जय जय
गुप्ततरयोगिन् जय जय (१८२१)
सर्वसंक्षोभिणि जय जय
सर्वसंक्षोभिन् जय जय
सर्वविद्राविणि जय जय
सर्वविद्राविन् जय जय
सर्वाकर्षिणी जय जय
सर्वाकर्षिन् जय जय
सर्वह्लादिनि जय जय
सर्वह्लादिन् जय जय
सर्वसम्मोहिनि जय जय
सर्वसम्मोहिन् जय जय
सर्वस्तम्भिनि जय जय
सर्वस्तम्भिन् जय जय
सर्वजृम्भिणि जय जय
सर्वजृम्भिन् जय जय
सर्ववशङ्करि जय जय
सर्ववशङ्कर जय जय

सर्वरञ्जिनि जय जय
सर्वरञ्जिन् जय जय
सर्वोन्मादिनि जय जय
सर्वोन्मादिन् जय जय
सर्वार्थसाधिनि जय जय
सर्वार्थसाधिन् जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरणि जय जय
सर्वसम्पत्तिपूरण जय जय
सर्वमन्त्रमयि जय जय
सर्वमन्त्रमय जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि जय जय
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन् जय जय
सम्प्रदाययोगिनि जय जय
सम्प्रदाययोगिन् जय जय (२१४१)
सर्वसिद्धिप्रदे जय जय
सर्वसिद्धिप्रद जय जय
सर्वसम्पत्प्रदे जय जय
सर्वसम्पत्प्रद जय जय
सर्वप्रियङ्करि जय जय
सर्वप्रियङ्कर जय जय
सर्वमङ्गलकारिणि जय जय
सर्वमङ्गलकारिन् जय जय
सर्वकामप्रदे जय जय
सर्वकामप्रद जय जय
सर्वदु:खविमोचिनि जय जय

सर्वदु:खविमोचिन् जय जय
सर्वमृत्युप्रशमनि जय जय
सर्वमृत्युप्रशमन् जय जय
सर्वविघ्ननिवारिणि जय जय
सर्वविघ्ननिवारिन् जय जय
सर्वाङ्गसुन्दरि जय जय
सर्वाङ्गसुन्दर जय जय
सर्वसौभाग्यदायिनि जय जय
सर्वसौभाग्यदायिन् जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन् जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिनि जय जय
कुलोत्तीर्णयोगिन् जय जय (२४०७)
सर्वज्ञे जय जय
सर्वज्ञ जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वशक्ते जय जय
सर्वैश्वर्यप्रदे जय जय
सर्वैश्वर्यप्रद जय जय
सर्वज्ञानमयि जय जय
सर्वज्ञानमय जय जय
सर्वव्याधिविनाशिनि जय जय
सर्वव्याधिविनाशिन् जय जय
सर्वाधारस्वरूपे जय जय
सर्वाधारस्वरूप जय जय
सर्वपापहरे जय जय
सर्वपापहर जय जय

सर्वानन्दमयि जय जय
सर्वानन्दमय जय जय
सर्वरक्षास्वरूपिणि जय जय
सर्वरक्षास्वरूपिन् जय जय
सर्वेप्सितप्रदे जय जय
सर्वेप्सितप्रद जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन् जय जय
निगर्भयोगिनि जय जय
निगर्भयोगिन् जय जय (२६५३)
वशिनि जय जय
वशिन् जय जय
कामेश्वरि जय जय
कामेश्वर जय जय
मोदिनि जय जय
मोदिन् जय जय
विमले जय जय
विमल जय जय
अरुणे जय जय
अरुण जय जय
जयिनि जय जय
जयिन् जय जय
सर्वेश्वरि जय जय
सर्वेश्वर जय जय
कौलिनि जय जय
कौलिन् जय जय

सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वरोगहरचक्रस्वामिन् जय जय
रहस्ययोगिनि जय जय
रहस्ययोगिन् जय जय (२८११)
बाणिनि जय जय
बाणिन् जय जय
चापिनि जय जय
चापिन् जय जय
पाशिनि जय जय
पाशिन् जय जय
अङ्कुशिनि जय जय
अङ्कुशिन् जय जय (२८६४)
महाकामेश्वरि जय जय
महाकामेश्वर जय जय
महावज्रेश्वरि जय जय
महावज्रेश्वर जय जय
महाभगमालिनि जय जय
महाभगमालिन् जय जय
महाश्रीसुन्दरि जय जय
महाश्रीसुन्दर जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन् जय जय
अतिरहस्ययोगिनि जय जय
अतिरहस्ययोगिन् जय जय (२९९६)
श्रीश्रीमहाभट्टारिके जय जय
श्रीश्रीमहाभट्टारक जय जय

सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि जय जय
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिन् जय जय
परापररहस्ययोगिनि जय जय
परापररहस्ययोगिन् जय जय (३०७६)
त्रिपुरे जय जय
त्रिपुर जय जय
त्रिपुरेशि जय जय
त्रिपुरेश जय जय
त्रिपुरसुन्दरि जय जय
त्रिपुरसुन्दर जय जय
त्रिपुरवासिनि जय जय
त्रिपुरवासिन् जय जय
त्रिपुराश्री जय जय
त्रिपुरश्री जय जय
त्रिपुरमालिनि जय जय
त्रिपुरमालिन् जय जय
त्रिपुरासिद्धे जय जय
त्रिपुरासिद्ध जय जय
त्रिपुराम्बा जय जय
त्रिपुराम्ब जय जय
महात्रिपुरसुन्दरि जय जय
महात्रिपुरसुन्दर जय जय (३२३८)

महामहेश्वरि जय जय
महामहेश्वर जय जय
महामहाराज्ञि जय जय
महामहाराज जय जय
महामहाशक्ते जय जय
महामहाशक्ते जय जय
महामहागुप्ते जय जय
महामहागुप्त जय जय
महामहाज्ञप्ते जय जय
महामहाज्ञप्त जय जय
महामहानन्दे जय जय
महामहानन्द जय जय
महामहास्पन्दे जय जय
महामहास्पन्द जय जय
महामहाशये जय जय
महामहाशय जय जय
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि जय जय
महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज जय जय (३४३२)
नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा
श्रीं ह्रीं ऐं ॥ ३४४१

एकचत्वारिंशदधिकचतु:शतोत्तरत्रिसहस्राक्षराणि ।
इति शुद्धशक्तिशिवमिथुनजयान्तमाला ।

॥ श्रीविद्याखड्गमाला सम्पूर्णा ॥

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कामेश्वर्यै नमः।
२ ....कामशक्त्यै नमः।
३ ...... कामसौभाग्यदायिन्यै नमः।
४ .... कामरूपायै नमः।
५ .... कामकलायै नमः।
६ .... कामिन्यै नमः।
७ ....कमलासनायै नमः।
८ .... कमलायै नमः।
९ .... कल्पनाहीनायै नमः।
१० ..... कमनीयकलावत्यै नमः।
११ . कमलाभारती सेव्यायै नमः।
१२ . कल्पिताशेषसंस्थितायै नमः।
१३ .... अनुत्तरायै नमः।
१४ .... अनघायै नमः।
१५ .... अनन्तायै नमः।
१६ .... अद्भुतरूपायै नमः।
१७ .... अनलोद्भवायै नमः।
१८ ...... अतिलोकचरित्रायै नमः।
१९ .... अतिसुन्दर्यै नमः।
२० .... अतिशुभप्रदायै नमः।
२१ .... अघहन्त्र्यै नमः।
२२ .... अतिविस्तारायै नमः।
२३ .... अर्चनतुष्टायै नमः।
२४ .... अमितप्रभायै नमः।
२५ .... एकाररूपायै नमः।
२६ .... एकवीरायै नमः।
२७ .... एकनाथायै नमः।
२८ .....एकान्तार्चनप्रियायै नमः।
२९ .... एकस्यै नमः।
३० .... एकभावतुष्टायै नमः।
३१ .... एकरसायै नमः।
३२ ..... एकान्तजनप्रियायै नमः।
३३ ...... एधमानप्रभावायै नमः।
३४ .. एकभक्तपातकनाशिन्यै नमः।
३५ ...... एलामोदलसन्मुख्यै नमः।
३६ .... एनोद्रिशक्रायुधसमस्थित्यै
.... नमः।
३७ .... ईहाशून्यायै नमः।
३८ .... ईप्सितायै नमः।
३९ .... ईशादिसेव्यायै नमः।
४० .... ईशानवराङ्गनायै नमः।
४१ ....ईश्वराज्ञापिकायै नमः।
४२ .... ईकारभाव्यायै नमः।
४३ .... ईप्सितफलप्रदायै नमः।
४४ .... ईशानायै नमः।
४५ .... ईतिहरायै नमः।
४६ .... ईशायै नमः।
४७ .... ईषदरुणाक्ष्यै नमः।
४८ .... ईश्वरेश्वर्यै नमः।
४९ .... ललितायै नमः।
५० .... ललनारूपायै नमः।
५१ .... लयहीनायै नमः।

५२ .... लसत्तनवे नमः।
५३ .... लयसर्वायै नमः।
५४ .... लयक्षोण्यै नमः।
५५ .... लयकर्त्र्यै नमः।
५६ .... लयात्मिकायै नमः।
५७ .... लघिमायै नमः।
५८ .... लघुमध्याढ्यायै नमः।
५९ .... ललमानायै नमः।
६० .... लघुद्रुतायै नमः।
६१ .... हयारूढायै नमः।
६२ .... हतामित्रायै नमः।
६३ .... हरकान्तायै नमः।
६४ .... हरिस्तुतायै नमः।
६५ .... हयग्रीवेष्टदायै नमः।
६६ .... हालप्रियायै नमः।
६७ .... हर्षसमुद्भवायै नमः।
६८ .... हर्षणायै नमः।
६९ .... हल्लकामाङ्ग्यै नमः।
७० .... हस्त्यन्तैश्वर्यदायिन्यै नमः।
७१ ..... हलहस्तार्चितपदायै नमः।
७२ ...... हविर्दानप्रसादिन्यै नमः।
७३ .... रामायै नमः।
७४ .... रामार्चितायै नमः।
७५ .... राज्ञ्यै नमः।
७६ .... रम्यायै नमः।
७७ .... रवमय्यै नमः।
७८ .... रत्यै नमः।
७९ .... रक्षिण्यै नमः।
८० .... रमण्यै नमः।
८१ .... राकायै नमः।
८२ ... रमणीमण्डलप्रियायै नमः।
८३ .. रक्षिताखिललोकेश्यै नमः।
८४ ...... रक्षोगणनिषूदिन्यै नमः।
८५ ...... अन्ताऽन्तकारिण्यै नमः।
८६ .... अम्भोजप्रियायै नमः।
८७ .... अन्तकभयङ्कर्यै नमः।
८८ .... अम्बुरूपायै नमः।
८९ .... अम्बुजकरायै नमः।
९० .. अम्बुजजातवरप्रदायै नमः।
९१ ...... अन्तःपूजाप्रियायै नमः।
९२ .... अन्तःस्थायै नमः।
९३ .... अरूपिण्यै नमः।
९४ .... अन्तर्वचोमय्यै नमः।
९५ .... अन्तकारातिवामाङ्क-
.... स्थितायै नमः।
९६ ..... अन्तःसुखरूपिण्यै नमः।
९७ .... सर्वज्ञायै नमः।
९८ .... सर्वगायै नमः।
९९ .... सारायै नमः।
१०० .... समायै नमः।
१०१ .... समसुखायै नमः।
१०२ .... सत्यै नमः।
१०३ .... सन्तत्यै नमः।
१०४ .... सन्ततायै नमः।
१०५ .... सोमायै नमः।
१०६ .... सर्वस्यै नमः।
१०७ .... साङ्ख्यायै नमः।
१०८ .... सनातन्यै नमः।

भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ...

जगज्जननी भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी

परमहंसी गंगा आश्रम, झौंतेश्वर, श्रीधाम, नरसिंहपुर (म.प्र.)